A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 11 अप्रैल, 2026

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 188, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2



subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews


प्रसंगवश

# ममता से मोदी तक, पश्चिम बंगाल चुनाव में कौन कितना ताक़तवर

**रूपसा सेनगुप्ता**

पश्चिम बंगाल में इस महीने होने वाले विधानसभा चुनाव किसी के लिए सत्ता में बने रहने की लड़ाई है तो किसी के लिए कुर्सी हथियाने की और किसी के लिए अपने अस्तित्व की रक्षा की। इस बात पर अनुमान लगाए जा रहे हैं कि इसमें कौन जीतेगा और कौन विपक्ष की भूमिका में रहेगा। राजनीति पर बहस करने वाले अक़्सर कहते हैं कि चुनावी गणित हमेशा सीधा नहीं होता।

इसकी वजह यह है कि चुनाव कभी मुद्दों पर होते हैं और कभी नतीजा उम्मीदवारों पर निर्भर होता है। इसमें कई बार एकदम अलग समीकरण काम करते हैं। पश्चिम बंगाल चुनाव के इस समीकरण में कई राजनेता अहम भूमिका निभा रहे हैं। इनमें से कोई चुनाव लड़ रहा है तो कोई दूसरों के समर्थन में प्रचार कर रहा है। कई लोग बंगाल के रहने वाले नहीं हैं- लेकिन ये लोग किसी न किसी तरीके से इस चुनाव के अहम किरदार के तौर पर उभरे हैं।

तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी अपने चुनाव अभियान के दौरान अक़्सर कहती हैं कि राज्य की सभी 294 सीटों पर वही उम्मीदवार हैं। उनकी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता भी उनको एकमात्र और अद्वितीय नेता बताते हैं। राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ लेने के बाद बीते 15 साल से वह लगातार सत्ता में हैं। बीते कुछ साल के दौरान उनकी पार्टी के नेताओं और मंत्रियों के खिलाफ़ भ्रष्टाचार के कई आरोप लगते रहे हैं। राज्य में विभिन्न मुद्दों पर आम लोगों की नाराज़गी भी सामने आती रही है।

महिला मुख्यमंत्री के तौर पर उनके कार्यकाल, जनसंपर्क और लड़ाकू नेता की छवि ने आम लोगों में उनकी अलग पहचान बनाई है। उनकी पार्टी भाजपा के खिलाफ़ लगातार मुखर रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि लक्ष्मी भंडार, कन्याश्री, स्वास्थ्य साथी और हाल में शुरू की गई युवा साथी जैसी योजनाएं इस महीने होने वाले चुनाव पर असर डाल सकती हैं। महिला और मुसलमान वोटर इस चुनाव में भी निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

भाजपा प्रधानमंत्री के तौर पर मोदी की छवि को सामने रख कर चुनाव लड़ना चाहती है। यह एक बड़ा फैक्टर हो सकता है। दूसरी ओर, अमित शाह को भाजपा का मुख्य चुनावी रणनीतिकार माना जाता है। यह दोनों नेता अपनी जनसभा और चुनावी रैलियों में केंद्र सरकार की विकास योजनाओं का ब्योरा देने के साथ ही तृणमूल कांग्रेस पर केंद्रीय योजनाओं का लाभ राज्य के आम लोगों तक न पहुंचने देने के भी आरोप लगा रहे हैं। साथ ही सीमा पार से घुसपैठ, भ्रष्टाचार और चंदा उगाही के आरोपों पर तृणमूल कांग्रेस पर निशाना साधती रही है। इस चुनाव में भी पार्टी ने इसे ही अपना हथियार बनाया है।

तृणमूल कांग्रेस के पुराने नेताओं की भीड़ में अभिषेक बनर्जी एक ऐसा युवा चेहरा हैं जो पहले ही संसदीय राजनीति में कामयाबी हासिल कर चुके हैं। उन्होंने पार्टी की नींव मज़बूत करने पर ख़ास ध्यान दिया है। उनकी 'ब्वॉय नेक्स्ट डोर' वाली छवि ने जनसंपर्क में मदद की है। कई लोग उनको भविष्य का नेता मानते हैं। विपक्ष ने अभिषेक के खिलाफ़ भ्रष्टाचार और आर्थिक गड़बड़ियों का आरोप लगाया है।

शुभेंदु अधिकारी ने वर्ष 2021 के विधानसभा चुनाव में नंदीग्राम सीट पर ममता बनर्जी को हराया था। बीते कुछ साल के दौरान विपक्ष के ताकतवर नेता के तौर भाजपा की ओर से वह सरकार के खिलाफ़ काफ़ी मुखर रहे हैं। पूर्व मेदिनीपुर और आसपास के इलाकों में उनका ख़ासा असर है। विपक्षी नेता उनके खिलाफ़ धार्मिक आधार पर ध्रुवीकरण के आरोप लगा रहे हैं।

हुमायूं कबीर को किसी दौर में कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी का करीबी माना जाता था। लेकिन कांग्रेस के बाद वह पहले भाजपा और फिर तृणमूल कांग्रेस में शामिल हुए थे। यानी वह कभी न कभी तीनों प्रमुख राजनीतिक दलों में रह चुके हैं। चुनाव से पहले उन्होंने 'आम जनता उन्नयन पार्टी' नाम के नए राजनीतिक दल का गठन किया है। इस चुनाव में उन्होंने असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के साथ सीटों पर समझौता किया था। हालांकि 10 अप्रैल को ओवैसी की पार्टी ने इस गठबंधन से बाहर निकलने का फ़ैसला किया। कबीर की पार्टी कुल 182 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इसमें नंदीग्राम और भवानीपुर सीटें भी शामिल हैं।

राजनीतिक विश्लेषक उज्ज्वल राय नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी पर कहते हैं, 'ये दोनों जब भी किसी चुनाव में जाते हैं तो उसका महत्व बढ़ जाता है। इस बार भाजपा एसआईआर के मुद्दे पर काफ़ी उत्साहित है और वह इस बार चुनाव में कामयाबी हासिल करना चाहती है। ममता बनर्जी तृणमूल कांग्रेस की सबसे बड़ी ताक़त हैं और उनकी छवि लड़ाकू नेता की है। यह याद रखना होगा कि ममता का सबसे बड़ा करिश्मा राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी नेता के तौर पर है। वह एसआईआर को राजनीतिक तौर पर इतना बड़ा मुद्दा बना रही हैं कि भाजपा को इस पर जवाब देना पड़ रहा है। दिलचस्प बात यह है कि एक सत्तारूढ़ पार्टी दूसरी सत्तारूढ़ पार्टी से सवाल कर रही है। एसआईआर का मुद्दा फिलहाल बाकी तमाम मुद्दों पर भारी पड़ रहा है।

राय की निगाह में हुमायूं कबीर बेहद दिलचस्प भूमिका में हैं। वह कहते हैं, 'तृणमूल कांग्रेस को मुसलमानों के ज़्यादा वोट मिलते हैं। इसलिए हुमायूं कबीर अहम हो गए हैं। उन्होंने अपनी अलग पार्टी बनाई है। वह यह समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि उनकी पार्टी ही मुसलमानों की एकमात्र हितैषी है और तृणमूल कांग्रेस अब तक महज़ वोट बैंक के तौर पर उनका इस्तेमाल करती रही है। वह बाबरी मस्जिद की तर्ज पर मस्जिद भी बना रहे हैं।'

राय का कहना था, 'दिलचस्प बात यह है कि तृणमूल कांग्रेस उन पर मुस्लिम वोटों में सेंध लगा कर भाजपा को फायदा पहुंचाने के आरोप लगा रही है। लेकिन दूसरी ओर, भाजपा का कहना है कि वह दरअसल दूसरे तरीके से ममता बनर्जी की ही मदद कर रहे हैं। इससे खेल दिलचस्प हो गया है।'

**(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)**

# स्वदेशी मिसाइलों से लैस होंगे 114 राफेल विमान

## रक्षा मंत्रालय ने बनाया प्लान, खरीदो और बनाओ नीति तैयार

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारत जिन 114 राफेल लड़ाकू विमानों को खरीदने का प्लान बना रहा है, उनको लेकर यह सुनिश्चित किया जाएगा कि स्वदेशी रूप से विकसित मिसाइलों और हथियार प्रणालियों को इनमें एकीकृत किया जा सके। रिपोर्ट के मुताबिक, मामले की जानकारी रखने वालों ने बताया कि खरीदो और बनाओ सौदे के तहत होने वाली सरकार-से सरकार डील में तथाकथित इंटरफेस कंट्रोल डॉक्यूमेंट को अनिवार्य किया जाएगा। रक्षा मंत्रालय से उम्मीद है कि वह अगले महीने फ्रांसीसी जेट निर्माता कंपनी डसॉल्ट को रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल जारी करेगा और उसके बाद अनुबंध पर बातचीत शुरू होगी। रक्षा अधिग्रहण परिषद ने 12 फरवरी को इस सौदे को मंजूरी दे दी थी।

### 96 फाइटर जेट भारत में ही बनाए जाएंगे

मामले के जानकार लोगों ने कहा कि योजना यह है कि 3.25 लाख करोड़ रुपये की इस मेगा डील के फाइनल कॉन्ट्रैक्ट में आईसीडी को पक्का कर दिया जाए। आईसीडी एक बहुत ही जरूरी सिस्टम इंजीनियरिंग डॉक्यूमेंट है, जो किसी सिस्टम और उसके सब-सिस्टम के बीच के सभी अहम प्रोटोकॉल को कंट्रोल और डिफाइन करता है। डीएसी द्वारा मंजूर किए गए प्रस्ताव के मुताबिक, 18 फाइटर जेट फ्रांस से फ्लाई-अवे कंडीशन में डिलीवर किए जाएंगे, जबकि बाकी 96 भारत में ही बनाए जाएंगे, जिनमें 25न से ज्यादा स्वदेशी सामग्री का इस्तेमाल होगा। इस तरह की रिपोर्टों के बीच कि इस मेगा डील में एक रुकावट आ गई है, क्योंकि फ्रांसीसी राफेल निर्माता डसॉल्ट ने भारत को लड़ाकू विमान का सोर्स कोड देने से इनकार कर दिया है। रक्षा मंत्रालय के शीर्ष अधिकारियों ने पुष्टि की है कि कोई भी देश ये मालिकाना सॉफ्टवेयर कोड (जो रडार, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सूट और हथियार एकीकरण को नियंत्रित करते हैं) किसी तीसरे देश को नहीं देता है और यह डील पूरी तरह से सही रास्ते पर है।

### भारत तेजस पर दे रहा ध्यान

भले ही भारत ने अमेरिका या रूस, किसी से भी पांचवीं पीढ़ी के विमान खरीदने का कोई फैसला नहीं लिया है, लेकिन वह भविष्य के लिए स्वदेशी रूप से तेजस मार्क एल ए के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इसके साथ ही, वह लंबी दूरी की मिसाइलों और दो इंजन वाले एल ए पर भी काम कर रहा है, ताकि विदेशी हवाई प्लेटफॉर्म, बियॉन्ड विज़ुअल रेंज हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों पर निर्भरता होगी।

### शरद की सुबह

चुका भी हूँ मैं नहीं
कहाँ किया मैंने प्रेम
अभी।
जब करूँगा प्रेम
पिघल उठेंगे
युगों के भूधर
उफन उठेंगे
सात सागर।
किंतु मैं हूँ मौन आज
कहाँ सजे मैंने साज
अभी।
सरल से भी गूढ़, गूढ़तर
तत्तव निकलेंगे
अमित विषमय
जब मथेगा प्रेम सागर
हृदय।
निकटतम सबकी
अपर शौर्यों की
तुम
तब बनोगी एक
गहन मायामय
प्राप्त सुख

तुम बनोगी
तब
प्राप्त जय!

**– शमशेर बहादुर सिंह**

# कठिन राह और हौसलों की साइकिल पर भारत यात्रा

● 5700 किमी की दूरी तय कर कोलकाता पहुंचीं आशा

## एनसीसी कैडेटों ने किया स्वागत, युवाओं में भरा जोश

**कोलकाता (एजेंसी)।** हजारों किलोमीटर की कठिन राह, बदलते मौसम, अनगिनत चुनौतियां- लेकिन हौसले बुलंद हों तो हर मंजिल करीब लगती है। इसी जज्बे की जीती-जागती मिसाल बनकर उभरी हैं आशा मालवीय, जिन्होंने अपनी साइकिल यात्रा के जरिए नारी शक्ति, देशभक्ति और अदम्य साहस का ऐसा संदेश दिया है, जिसने युवाओं के दिलों में नई ऊर्जा भर दी है। 78वें भारतीय सेना दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्तर की एथलीट, पर्वतारोही व साइक्लिस्ट आशा मालवीय ने 11 जनवरी 2026 को राजस्थान के जयपुर से 7,800 किलोमीटर लंबी देशव्यापी पूर्व-पश्चिम एकल साइकिल अभियान (यात्रा) की शुरुआत की थीं। इस सफर में वह राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड को पार करते हुए करीब 5,700 किलोमीटर की दूरी तय कर कोलकाता पहुंचीं, जहां गुरुवार को एनसीसी कैडेटों व अधिकारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। 7,800 किलोमीटर में से अब तक वह 5,700 किमी की दूरी तय कर चुकी हैं, जबकि उनका अंतिम लक्ष्य चीन की सीमा तक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की कृषि लोकरंग आयोजन की तैयारियों की समीक्षा

# कृषि लोकरंग से किसानों के जीवन में आएगा उत्सव और सम्मान का नया रंग : मुख्यमंत्री

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषि हमारी जीवन संस्कृति का मूल आधार है। किसान अन्नदाता होने के साथ हमारी संस्कृति, परम्पराओं और सुरक्षित भविष्य का आधार स्तम्भ हैं। किसान अपने परिवार के लिए ही नहीं, पूरे समाज के लिए अन्न का उत्पादन करता है। किसान मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों का भी उदर-पोषण करता है। ऐसे अन्नदाता के जीवन में आनंद और उत्सव का संचार करना हमारा दायित्व है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार यह वर्ष किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है। कृषि लोकरंग-2026 इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास (समत्व भवन) में प्रदेश में कृषि लोकरंग - 2026 आयोजन की तैयारियों की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यह आयोजन किसानों के जीवन, उनकी पुरा परम्पराओं और कृषि संस्कृति का जीवंत उत्सव बने। उन्होंने कहा कि जो दिन-रात अथक श्रम-साधना कर सबके उदर पोषण की चिंता करता है, उसके परिश्रम से भरे जीवन में खुशियों के सुनहरे रंग भरना हम सबका कर्तव्य है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि लोकरंग में किसानों और आमजन की सहभागिता बढ़ाने के लिए कृषि क्विज प्रतियोगिता जैसे नवाचार किए जाएं। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी दिए जाएं। प्रत्येक जिले के प्रथम विजेता (टापर) को पुरस्कार के रूप में किसानों के लिए हर मौसम में उपयोगी कृषि संसाधन (जैसे ट्रेक्टर आदि) एवं अन्य तरह के पुरस्कार भी दिए जा सकते हैं।

### लोकरंग के दौरान राज्य, संभाग एवं जिलास्तर पर किए जाएं सांस्कृतिक कार्यक्रम

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह वर्ष हम किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रहे हैं। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना, उनके जीवन स्तर में सुधार लाना और कृषि को लाभकारी बनाने के साथ ही किसानों के जीवन में आनंद लाना भी है। इसीलिए हम सब मिलकर इस वर्ष को किसानों के आनंद के वर्ष के रूप में मनाएंगे, जिससे किसान सिर्फ आर्थिक रूप से नहीं, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी खुद को सम्मानित महसूस करें। इसके लिए लोकरंग के दौरान राज्य स्तरीय कार्यक्रम के अलावा संभाग एवं जिलास्तर पर सर्व लोकप्रिय सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रदर्शनी सहित कवि सम्मेलन जैसे आयोजन भी किए जाएं। इन कार्यक्रमों में किसानों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों तक कृषि लोकरंग आयोजन की जानकारी प्रभावी रूप से पहुंचायी जाए। कृषि लोकरंग में स्थानीय उत्पादों, हस्तशिल्प और कृषि आधारित उद्योगों सहित उनके उत्पादों को भी प्रदर्शित किया जाए, जिससे किसानों को बाजार से जोड़ने का अवसर मिल सके।

# बंगाल में भाजपा का वादा, महिलाओं को 3 हजार महीना

● 6 महीने में यूसीसी लागू होगा, ममता बोलीं-सांप पर भरोसा करना, बीजेपी पर नहीं

**कोलकाता (एजेंसी)।** भारतीय जनता पार्टी ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल के लिए पार्टी का घोषणा पत्र यानी भरोसे का पत्र जारी किया। इसमें महिलाओं को 3 हजार महीना, युवा बेरोजगारों को 3 हजार महीना की मदद, पहले 6 महीने में यूसीसी लागू करना और सरकारी कर्मचारियों को 45 दिन में सातवां वेतनमान देने की घोषणा की गई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पत्र जारी करते हुए कहा बंगाल की जनता के लिए पिछले 15 साल बुरे सपने के जैसे रहे हैं। ममता घुसपैठियों के जरिए तीसरी बार सीएम बनी हैं। हम घुसपैठियों को डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट करेंगे। राज्य में दो फेज में 23 और 29 अप्रैल को वोटिंग होनी है। रिजल्ट 4 मई को आएगा। इधर, बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने नॉर्थ 24 परगना के टेंटुलिया में चुनावी रैली की। उन्होंने यहां कहा- सांप पर भी भरोसा किया जा सकता है, लेकिन बीजेपी पर नहीं। भाजपा असम चुनाव के लिए बाहर से लोगों को लेकर आई, उसे राज्य के निवासियों के वोटों से जीत का भरोसा नहीं था। **नौकरियों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देंगे-** मोदी सरकार प्रयास कर रही है, लेकिन बंगाल सरकार बाड़ लगाने के लिए जमीन नहीं दे रही है। हम नदी-नालों की पेट्रोलिंग की वैज्ञानिक व्यवस्था करेंगे। सभी सरकारी पद परमानेंट कराने का काम करेंगे। यह सुनिश्चित करेंगे कि करोड़ों के घोटाले, जो पहले हुए हैं, वे न हों। पारदर्शिता के साथ युवाओं को नौकरी मिले, इसके लिए योजना बनाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की जिन योजनाओं का ममता बनर्जी ने कबाड़ा किया है, उन्हें पुनर्जीवित करने का काम करेंगे। कोलकाता के विकास के लिए योजना लाएंगे, ताकि यह देश की सांस्कृतिक और औद्योगिक राजधानी बन सके। पुलिस बल समेत राज्य की सभी नौकरियों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देंगे। 75 लाख लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य है। हर मंडल में महिला थाना और महिला डेस्क बनाई जाएगी। हम ऐसे बंगाल का निर्माण करेंगे कि किसी मुख्यमंत्री को यह बयान न देना पड़े कि महिला को इतनी रात में बाहर निकलने की जरूरत क्या थी। गर्भवती महिलाओं को 21 हजार रुपए और 6 पोषण किट दी जाएंगी। राज्य संचालित बसों में सभी महिलाओं को मुफ्त यात्रा भाजपा सुनिश्चित करेगी। कोलकाता मेट्रो का शत-प्रतिशत विद्युतीकरण किया जाएगा। एक ही साल में 61 रेलवे प्रोजेक्ट को जमीन देकर यह तय करेंगे कि ये रेल परियोजनाएं विकास की धुरी बनें। सरकारी जमीन से कब्जे 200 दिन में हटाए जाएंगे। घुसपैठियों को हटाने का काम करेंगे।

### शाह बोले-

### हम बंगाल के सपने को साकार करेंगे

शाह ने कहा कि गुरुदेव की जन्म जयंती के आसपास ही भय के कोहरे से बाहर आकर भरोसे का शासन स्थापित करेगी। 15 साल का बुरा सपना एक तरह से हर प्रकार के संकट का परिचायक रहा। हमारा संकल्पपत्र बंगाल के विकास का रास्ता खोलेगा। जहां मन भययुक्त न हो सिर गर्व से ऊंचा हो गुरुदेव की इस भूमि को हम साकार करेंगे। बंगाल की जनता की नया रास्ता ढूंढेगी। ये भरोसा कानून के राज, रोजगार सोनार बांगला के निर्माण का है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

# सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 11 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

## गुजरात में बीजेपी ने इंस्टाग्राम स्टार पर फिर खेला दांव

● अंकिता परमार की युवा मोर्चा में एंट्री के बाद टिकट भी मिला

**अहमदाबाद (एजेंसी)।** गुजरात में इंस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर के तौर पर चर्चा में आई बीजेपी की युवा नेता अंकिता परमार फिर सुर्खियों में हैं। वह करीब तीन साल पहले तब सुर्खियों में आई थीं जब वह जिम ट्रेनर से तहसील पंचायत का चुनाव जीती थीं और फिर वडोदरा तहसील की चेयरमैन बनी थीं। सोशल मीडिया पर सेलिब्रेटी जैसा रुतबा रखने वाली अंकिता परमार को पिछले दिनों बीजेपी ने युवा मोर्चा का उपाध्यक्ष बनाया था तब यह माना गया था कि उन्हें संगठन में भेज दिया गया है लेकिन पार्टी ने उन्हें वडोदरा जिले की पोर सीट से मैदान में उतारकर चौंका दिया है। अंकिता परमार की उम्मीदवारी पर दावेदार रहीं नयना परमार ने सवाल खड़े किए हैं। अंकिता परमार को पोर सीट से टिकट मिलने पर विवाद भी सामने आया है। आरोप है कि पार्टी ने जमीनी कार्यकर्ताओं के साथ अन्याय किया। गुरुवार को बीजेपी ने वडोदरा जिला पंचायत की हाई-प्रोफाइल 'पोर' सीट के लिए एक उम्मीदवार घोषित किया। वैसे ही स्थानीय राजनीति गरमा गई है। इस विवाद में सबसे गंभीर मोड़ तब आया जब नयनाबेन परमार ने गंभीर आक्षेप लगाए। नयना परमार को पोर से मजबूत दावेदार माना गया था। नयनाबेन परमार ने पूर्व जिला बीजेपी अध्यक्ष रसिक प्रजापति पर पैसों के लेनदेन के गंभीर आरोप लगाए। इन पर रसिक प्रजापति की प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

### निर्दलीय लड़ने का किया ऐलान

नयनाबेन नयनाबेन परमार ने साफ कर दिया है कि अब वह निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ेंगी। उन्होंने सोशल मीडिया और 'रील लाइफ' के दिखावे पर निशाना साधते हुए कहा कि असलियत व रील लाइफ में बड़ा फर्क है।

## डॉक्टर हरिवंश राज्यसभा के मनोनीत सांसद बने

● उपसभापति बन सकते हैं, कार्यकाल 2032 तक रहेगा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** राज्यसभा के पूर्व उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह मनोनीत सांसद बने। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने अपने कक्ष में शपथ दिलाई। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें राज्यसभा के लिए नॉमिनेट किया था। हरिवंश का पिछला कार्यकाल 9 अप्रैल को खत्म हो गया था। उनकी पार्टी जेडीयू ने इस बार नाम नहीं दिया था। इसके बाद राष्ट्रपति ने उनका मनोनयन किया। पूर्व सीजेआई रंजन गोगोई के

रिटायर होने के बाद सीट खाली हुई थी। इसे भरने के लिए हरिवंश को चुना गया। 69 साल के हरिवंश 2032 तक राज्यसभा में रहेंगे। राज्यसभा में 12 सदस्य मनोनीत होते हैं, जिन्हें राष्ट्रपति तय करते हैं। इन्हें कला, साहित्य, विज्ञान और समाज सेवा में विशेष योगदान के आधार पर चुना जाता है। इधर, बिहार के सीएम नीतिश कुमार ने भी राज्यसभा सांसद की शपथ ली। हरिवंश को नीतिश कुमार का करीबी माना जाता था, लेकिन कुछ समय से दोनों के बीच दूरी नजर आई। 18 मार्च को पीएम मोदी ने कमबैक का हिंट दिया था बजट सत्र के दूसरे चरण के दौरान राज्यसभा में रिटायर हो रहे सांसदों का विदाई समारोह 18 मार्च को हुआ था।

# नक्सल उन्मूलन के बाद बालाघाट जिले में तेज करें विकास की गति: मुख्यमंत्री

### बालाघाट में आगामी माह होगा जनजातीय महोत्सव, मुख्यमंत्री ने ली जनजातीय महोत्सव के संबंध में बैठक

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के बालाघाट जिले में नक्सल उन्मूलन के बाद विकास की गति को और तेज किया जाएं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा दिए गए निर्देश एवं प्रचार की गई कार्य योजना के फलस्वरूप प्रदेश से नक्सल तत्वों पर पूर्ण नियंत्रण में सफलता मिली है। नक्सलवाद की समस्या से बरसों प्रभावित रहे बालाघाट जिले सहित अन्य प्रभावित स्थानों पर अब तीव्र गति से कार्य करने की आवश्यकता है। मध्यप्रदेश सरकार विकास कार्यों की गति तेज करने को प्राथमिकता दे रही है। जनजातीय समाज की प्रतिभाओं को भी विभिन्न महोत्सवों से मंच देने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में शुक्रवार को समत्व भवन में आगामी माह बालाघाट में होने वाले जनजातीय महोत्सव के संबंध में विचार-विमर्श हुआ। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन सहित संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव आदि बैठक में उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय महोत्सव में सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों के साथ ही विभिन्न विभाग स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप शिविर आयोजित करें। धरती आबा अभियान में हितग्राहियों को लाभान्वित करने और स्वास्थ्य विभाग द्वारा क्षेत्र में मेगा स्वास्थ्य शिविर और सिकल सेल स्क्रीनिंग का कार्य किया जाए। शिक्षा सुविधाओं के विस्तार, महिलाओं और बच्चों के कल्याण, रोजगार प्रदान करने, दिव्यांग नागरिकों को हित लाभ प्रदान करने और पूर्व वर्षों में नक्सल गतिविधियों के कारण प्रभावित हुए परिवारों की आवश्यक सहायता के लिए कार्य किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'एक बगिया मां के नाम' कार्यक्रम अंतर्गत गतिविधियों के आयोजन, आराधना स्थलों पर सुविधाओं के विकास के कार्य भी किए जाएं। जनजातीय संस्कृति विशेषकर बैगा समुदाय से जुड़े लोक नृत्यों, खेतों में बोवनी के कार्य से पूर्व आयोजित किए जाने वाले बिदरी, बीज पंडूम और बड़ा देव पूजा के कार्यक्रमों का भी आयोजन होगा।

# 'ब्लैक फ्राइडे' दो हादसों में 13 की मौत

● यमुना में स्टीमर डूबा, 10 पर्यटकों की मौत, वृंदावन में हादसा ● रेस्क्यू के लिए इंडियन आर्मी पहुंची, सभी पंजाब के रहने वाले

**मथुरा (एजेंसी)।** मथुरा के वृंदावन में 30 पर्यटकों से भरा स्टीमर यमुना नदी में पलट गया। हादसे में 10 पर्यटकों की डूबने से मौत हो गई। स्टीमर में सवार सभी पर्यटक पंजाब से घूमने आए थे। डीएम चंद्र प्रकाश सिंह ने बताया, हादसा दोपहर करीब 3 बजे केसी घाट पर हुआ, जो श्रीबांके बिहार मंदिर से ढाई किमी की दूरी पर है। राहत और बचाव कार्य के लिए सेना आ गई है। गाजियाबाद से एनडीआरएफ की टीम भी वृंदावन आ गई है। डीआईजी शैलेश पांडेय ने बताया, पर्यटक 2 स्टीमर में सवार थे। एक पलट गया, जिस पर 25 से 27 लोग सवार थे। 10 लोगों की मौत हुई है। 12 घायलों को बाहर निकाल लिया गया है। 3 से 5 लोगों के अभी लापता होने की सूचना है। रेस्क्यू टीम लगातार सर्च कर रही हैं। पर्यटक मनोहर लाल ने बताया- हम

सभी पंजाब में लुधियाना, हिसार, और मुक्तेश्वर से हैं। तेज हवा चल रही थी। यमुना नदी के बीच में स्टीमर अचानक तेज हवा से डगमगाने लगा। स्पीड भी बढ़ गई। तभी स्टीमर पीपा पुल (पांटून पुल) से टकराकर पलट गया। मथुरा डीएम सीपी सिंह ने वृंदावन नाव हादसे को लेकर बताया कि लुधियाना से 30 तीर्थयात्री आए थे। वे यमुना नदी में बोट से जा रहे थे। इसी दौरान बोट पलट गई। अभी तक 9 लोगों की डेडबॉडी मिली है। 16-17 लोग सुरक्षित निकाल लिए हैं। अन्य तीर्थयात्रियों को ढूंढ़ा जा रहा है। आर्मी और एनडीआरएफ टीम बुलाई गई है। हॉस्पिटलों को हाई अलर्ट पर रखा गया है। पंजाब से आए श्रद्धालुओं के वृंदावन घूमने के क्रम में हादसे की जानकारी सामने आ रही है। जानकारी के अनुसार, श्रद्धालुओं से भरी नाव पांटून ब्रिज से टकराकर पलट गई। इस हादसे में 10 लोगों की मौत की जानकारी सामने आ रही है। वहीं, 22 लोगों को रेस्क्यू किया गया है।

## 2 कारें भिड़ीं कॉन्स्टेबल का परिवार खत्म

● 6 की जान गई, शादी से लौट रहे थे

**कांकेर (एजेंसी)।** छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में भीषण सड़क हादसे में कॉन्स्टेबल मुनेंद्र नेताम के परिवार के चार लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हैं। हादसा नेशनल हाईवे-30 पर कोतवाली थाना क्षेत्र में दो कारों की आमने-सामने टक्कर से हुआ। जानकारी के मुताबिक,

उड़कुडा निवासी नेताम परिवार गुरुवार रात करीब 11 बजे चीवरांज में शादी से लौट रहा था। नाथिया नवागांव के पास उनकी कार दूसरी कार से टकरा गई। टक्कर इतनी तेज थी कि 6 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों में मुनेंद्र नेताम की पत्नी कुंती नेताम, दामाद शगुनदास नेताम, बहन मकतुला नेताम और 7 साल का भांजा वंश नेताम के साथ दो रिश्तेदार भी शामिल हैं।

## हिमाचल के कांगड़ा में भीषण सड़क हादसा

● 90 फीट गहरी खाई में गिरी ट्रैक्टर-ट्रॉली, 3 की मौत और 27 घायल

**कांगड़ा (एजेंसी)।** एनएच-503 पर ढलियारा स्थित 'खूनी मोड़' के पास राधा स्वामी सत्संग घर के नजदीक एक दर्दनाक सड़क हादसा सामने आया है, जिसमें 3 की मौत और 27 श्रद्धालुओं के घायल होने की सूचना है। एक ट्रैक्टर-ट्राली अनियंत्रित होकर करीब 90 फीट गहरी खाई में जा गिरी, जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई। मिली जानकारी के अनुसार, पंजाब के कपूरथला से श्रद्धालुओं का एक समूह ट्रैक्टर-ट्राली में सवार होकर देवी दर्शन के लिए हिमाचल आया हुआ था। श्रद्धालुओं ने पहले चिंतपूर्णी मंदिर में माथा टेका और इसके बाद ज्वालामुखी मंदिर के लिए रवाना हुए थे। बताया जा रहा है कि जैसे ही ट्रैक्टर ढलियारा के खतरनाक 'खूनी मोड़' के पास पहुंचा, अचानक ब्रेक फेल हो गए। चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख पाया और ट्रैक्टर-ट्राली सीधी खाई में जा गिरी। हादसे के तुरंत बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई।

## नीतिश कुमार के अनुभव से बढ़ेगी संसद की गरिमा

● प्रधानमंत्री मोदी ने राज्यसभा सांसद बनने पर दी बधाई

**पटना (एजेंसी)।** बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण कर लिया है। नीतिश कुमार के शपथ लेने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बधाई दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर लिखा-नीतिश कुमार जी देश के सबसे अनुभवी नेताओं में से एक हैं। सुशासन को लेकर उनकी प्रतिबद्धता की हर तरफ सराहना हुई है। उन्होंने बिहार के विकास में अमिट योगदान दिया है। उन्हें एक बार फिर संसद में देखना बहुत सुखद होगा। पीएम मोदी ने आगे लिखा- सांसद और केंद्रीय मंत्री के रूप में भी उन्होंने कई वर्षों तक अपनी सेवाएं दी हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि उनके लंबे राजनीतिक अनुभव से संसद की गरिमा और बढ़ेगी। राज्यसभा सांसद के रूप में शपथ लेने पर उन्हें हार्दिक बधाई और

आगे के कार्यकाल के लिए ढेरों शुभकामनाएं। इससे पूर्व शपथ ग्रहण से पहले संजय झा, रामनाथ ठाकुर, सम्राट चौधरी समेत अन्य नेताओं ने सीएम नीतीश कुमार से मुलाकात की थी।

## 10 हजार से ज्यादा ऑनलाइन-पेमेंट पर 1 घंटे का होल्ड

● *गलत ट्रांजेक्शन कैंसिल करने का मौका मिलेगा, आ गया नया प्रस्ताव*

**आरबीआई ने 'किल स्विच' का सुझाव भी दिया, डिजिटल फ्राड रुकेगा**

**मुंबई (एजेंसी)।** जल्द ही ऐसा हो सकता है कि आपका 10 हजार से ज्यादा का ऑनलाइन ट्रांजैक्शन तुरंत न हो। उसमें 1 घंटे की देरी हो सकती है। इससे ग्राहकों को गलत ट्रांजैक्शन रोकने या कैंसिल करने का मौका मिलेगा। देश में बढ़ते डिजिटल फ्रॉड को रोकने के लिए आरबीआई ने ये प्रस्ताव रखा है। आरबीआई का मानना है कि जालसाज अक्सर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाकर जल्दबाजी में पैसे ट्रांसफर करवाते हैं, यह देरी उस दबाव को खत्म करेगी। फिलहाल ज्यादातर डिजिटल ट्रांजैक्शन तुरंत होते हैं, जिससे यूजर को सोचने या गलती सुधारने का मौका नहीं मिलता। **सीनियर सिटीजंस के लिए 'ट्रस्टेड पर्सन' सुविधा-** 70 साल से ज्यादा उम्र के बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए सुरक्षा और सख्त होगी। 50,000 रुपए से ज्यादा के ट्रांजैक्शन के लिए एक ट्रस्टेड पर्सन (भरोसेमंद व्यक्ति) की मंजूरी जरूरी हो सकती है। यह फ्रॉड के खिलाफ सुरक्षा की एक दूसरी लेयर की तरह है।

### डिजिटल पेमेंट बंद करने के लिए 'किल स्विच'

आरबीआई ने एक किल स्विच का सुझाव भी दिया है। अगर किसी ग्राहक को लगता है कि उसका अकाउंट हैक हो गया है या कोई गलत ट्रांजैक्शन हो रहा है, तो वह एक क्लिक से अपनी सभी डिजिटल पेमेंट सेवाओं को तुरंत बंद कर सकेगा। पिछले साल देश में डिजिटल फ्रॉड के कारण होने वाला नुकसान 22 हजार करोड़ रुपए के पार पहुंच गया। आरबीआई के अनुसार 10 हजार रुपए से ऊपर के ट्रांजैक्शन कुल फ्रॉड केस का सिर्फ 45 फीसदी हैं, लेकिन कुल फ्रॉड वैल्यू में इनकी हिस्सेदारी 98.5 फीसदी है।

## भारतरत्न कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा का सागर में अनावरण आज

**सागर।** भारतरत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा का अनावरण 11 अप्रैल को दोपहर बारह बजे सागर के अटल पार्क परिसर में होने जा रहा है। सुप्रसिद्ध सोशलिस्ट चिंतक व राजनेता रघु ठाकुर की पहल से नगरपालिका निगम ने कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा स्थापना के लिए अटल पार्क में स्थान सुरक्षित किया है। प्रतिमा का अनावरण मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष व प्रसिद्ध पत्रकार रामबहादुर राय, भारत सरकार के जलशक्ति मंत्री राजभूषण चौधरी, मध्यप्रदेश शासन के मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत, पूर्व मंत्री भूपेन्द्र सिंह, पूर्व विधायक शैलेन्द्र जैन, प्रदीप लारिया, महापौर संगीता तिवारी, नगर निगम अध्यक्ष वृन्दावन अहिरवार की उपस्थिति में होगा। समारोह की अध्यक्षता रघु ठाकुर करेंगे। दो वर्ष पहले ही भारत सरकार ने अपने सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न से कर्पूरी ठाकुर को मरणोपरांत सम्मानित किया था।

उल्लेखनीय है कि कर्पूरी ठाकुर दो बार बिहार के मुख्यमंत्री, लोकसभा व बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। पहले आमचुनाव से फरवरी 1988 तक निरंतर वे किसी न किसी सदन में गरीबों की आवाज को मुखरता से उठाते रहे। उनकी गणना भारत के उन सोशलिस्ट नायकों में होती है जिन्होंने समाजवाद को जमीन पर उतारा। रघु ठाकुर उनके घनिष्ठ साथी रहे और उनके निमंत्रण पर कर्पूरी ठाकुर सागर सहित देशभर में अलग अलग स्थानों पर गये।

### विशेष रीजनल मेडिकल हब के लिये इंदौर-उज्जैन कॉरिडोर बेहतर जगह

# मेडिकल हब बनने से मध्यप्रदेश में रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ेंगे : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

**भोपाल।** उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में पाँच विशेष रीजनल मेडिकल हब स्थापित करने की योजना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशानुसार मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशन में विशेष रीजनल मेडिकल हब बनाने की दिशा में कार्य शुरू हो गया है। इस मेडिकल हब के बनने से मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ेंगे। इस दृष्टि से मध्यप्रदेश विशेषकर इंदौर में विशेष मेडिकल हब बनने की अपार संभावनाएं है। मध्यप्रदेश में विशेष रीजनल मेडिकल हब के लिये इंदौर-उज्जैन कॉरिडोर बेहतर जगह है। इंदौर में एक तरफ, ओंकारेश्वर ज्योर्तिलिंग है तो दूसरी तरफ उज्जैन में प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर है। बाहर से आने वाले नागरिक उक्त दोनों ही ज्योर्तिलिंगों पर दर्शन के लिये आते है। इस दृष्टि से भी विशेष रीजनल मेडिकल हब इंदौर-उज्जैन कॉरिडोर पर बनाना उपयुक्त है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि इंदौर में एजुकेशन हब है। इंदौर में मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर है। रेलवे और एयर कनेक्टिविटी है। व्यवसायी दृष्टि से भी इंदौर तेजी से बढ़ता हुआ शहर है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि केन्द्र सरकार की आयुष्मान स्वास्थ्य योजना से नागरिकों का निःशुल्क इलाज हो रहा है। अभी तक करोड़ नागरिकों द्वारा आयुष्मान स्वास्थ्य योजना का लाभ ले चुके हैं।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल आज इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित स्टेकहोल्डर कंस्यूलेशन वर्कशॉप फॉर डेवलपमेंट ऑफ इंदौर-उज्जैन हेल्थ एंड वेलनेस टूरिज्म कॉरिडोर में अपना संबोधन दे रहे थे। इस मौके पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की एमडी डॉ. सलोनी सिड़ाना, एसीएस हेल्थ श्री अशोक वर्णवाल, संभागायुक्त डॉ. सुदाम खाड़े और आयुष विभाग के आयुक्त श्री शोभित जैन विशेष रूप से उपस्थित थे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विशेष रीजनल मेडिकल हब स्थापित करने का उद्देश्य दुनियाभर से आने वाले मरीजों को विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएं आधुनिक तकनीक और किफायती इलाज मुहैया कराना है। भारत की चिकित्सा क्षमता को दुनिया के सामने लाने में विशेष रीजनल मेडिकल हब की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। वर्तमान में भारत मेडिकल टूरिज्म इंडेक्स और वेलनेस इंडेक्स में अच्छी स्थिति में है और हमें इसे और बेहतर करना है।

## ओलेक्ट्रा का ग्रीन मोबिलिटी पर फोकस

**हैदराबाद।** देश की अग्रणी इलेक्ट्रिक बस निर्माता ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक लिमिटेड ने नई ब्रांड पहचान पेश की है। इसके साथ कंपनी ने खुद को इलेक्ट्रिक बस निर्माता से आगे बढ़ाकर मोबिलिटी और एनर्जी सॉल्यूशंस देने वाली इनोवेशन-ड्रिवन कंपनी के रूप में स्थापित करने की दिशा तय की है।

कंपनी ने 'हर दिन को बदलना' है, टैगलाइन अपनाई है, जो रोजमर्रा की यात्रा को आसान और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की प्रतिबद्धता दर्शाती है। नई रणनीति प्रैगमैटिक फ्यूचरिज्म, एक्सेसिबल इनोवेशन और ट्रस्टेड गाइड जैसे स्तंभों पर आधारित है। पहला है भविष्य की सोच लेकिन जमीन से जुड़ी हुई। दूसरा है ऐसा नवाचार जो हर किसी के लिए उपयोगी हो। तीसरा है भरोसेमंद मार्गदर्शक बनना।

ये सिद्धांत कंपनी के काम और बाजार में उसकी भूमिका को तय करते हैं। प्रबंध निदेशक महेश बाबू ने कहा, यह बदलाव कंपनी की दीर्घकालिक सोच और विकास की दिशा को दर्शाता है। ओलेक्ट्रा के 3,600 से अधिक ईवी देशभर में चल रहे हैं और 10 हजार से ज्यादा ऑर्डर पाइपलाइन में हैं, जिससे कंपनी ग्रीन ट्रांसपोर्ट को नई रफ्तार देने के लिए तैयार है।

## किराए पर कार लेकर फरार, केस दर्ज

**इंदौर।** भंवरकुआं थाना क्षेत्र में कार किराए पर लेकर फरार होने का मामला सामने आया है। आरोपी ने चार दिन के लिए गाड़ी ली, लेकिन तय समय बीतने के बाद भी न तो कार लौटाई और न ही संपर्क में रहा। पुलिस के अनुसार, फरियादी ने अपनी कार मोहसिन खान को किराए पर दी थी। आरोपी ने 9 मार्च तक गाड़ी लौटाने का भरोसा दिया था, लेकिन इसके बाद उसका मोबाइल बंद मिला और वह लापता हो गया। काफी तलाश के बाद पीड़ित ने थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अमानत में खयानत का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

## 1 किलो 80 ग्राम अवैध गांजा बरामद

**इंदौर।** शहर में ड्रग्स और नशीले पदार्थों की तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत बाणगंगा पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने सुपर कॉरिडोर स्थित मेट्रो स्टेशन के पास से एक युवक को गांजा तस्करी करते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि एक युवक इलाके में नशीले पदार्थ की डिलीवरी के इरादे से घूम रहा है। सूचना के आधार पर टीम ने मौके पर घेराबंदी की। पुलिस को देखते ही संदिग्ध युवक भागने लगा, लेकिन मुस्तैदी दिखाते हुए पुलिस ने उसे पकड़ लिया। पकड़े गए आरोपी की पहचान राज पिता अनिल, निवासी गोविंद नगर के रूप में हुई है। तलाशी के दौरान उसके पास से 1 किलो 80 ग्राम अवैध गांजा बरामद हुआ।

## नाबालिग ने एसिड पिया, हालत में सुधार

**इंदौर।** बाणगंगा क्षेत्र में एक नाबालिग पीड़िता ने आरोपी की लगातार प्रताड़ना और जान से मारने की धमकियों से परेशान होकर आत्मघाती कदम उठाते हुए एसिड पी लिया। फिलहाल उपचार के बाद पीड़िता की हालत में सुधार बताया जा रहा है। पुलिस के अनुसार, पीड़िता के पिता ने नरवल निवासी आरोपी राम सोलंकी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। फरियादी ने बताया कि उनकी नाबालिग बेटी ने पहले आरोपी के खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इसी से नाराज होकर आरोपी लगातार केस वापस लेने और समझौते का दबाव बना रहा था। आरोपी ने पीड़िता को खुलेआम धमकी दी थी कि यदि उसने शिकायत वापस नहीं ली तो उसे जान से खत्म कर देगा। इन धमकियों से नाबालिग गहरे भय में आ गई थी। बताया जा रहा है कि 19 फरवरी की सुबह पीड़िता ने घर में रखा एसिड पी लिया। तबीयत बिगड़ने पर उसने परिजनों को पूरी बात बताई। परिजन तत्काल उसे अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां समय पर उपचार मिलने से उसकी जान बच गई। बाणगंगा पुलिस ने आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

## किसानों के मुद्दों पर कांग्रेस का प्रदर्शन

**इंदौर।** किसानों की समस्याओं को लेकर प्रदेश की सियासत एक बार फिर गरमा गई है। इंदौर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष विपिन वानखेड़े के नेतृत्व में सैकड़ों किसानों ने कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन किया और ज्ञापन सौंपते हुए सरकार पर वादाखिलाफी के आरोप लगाए। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ता और किसान हाथों में झंडे-बैनर लेकर पहुंचे और जमकर नारेबाजी की। किसान नेताओं ने आरोप लगाया कि विधानसभा चुनाव के दौरान सरकार ने गेहूं 2700 रुपए प्रति क्विंटल खरीदने और 40 रुपए बोनस देने का वादा किया था, लेकिन अब केवल बोनस देकर किसानों को गुमराह किया जा रहा है। ज्ञापन में खरीदी प्रक्रिया में देरी, बारदाने की कमी, ऋण वसूली की समय-सीमा बढ़ाने और प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा देने की मांग उठाई गई।

## छावनी मंडी में गेहूं की खरीद पर विवाद

**इंदौर।** छावनी अनाज मंडी में गेहूं खरीदी को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। किसानों ने खरीदी प्रक्रिया में अनियमितता और भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए हैं। लसूड़िया के किसान दिलीप सिंह और किसान नेता हंसराज मंडलोई ने मंडी प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं। किसानों का आरोप है कि मंडी निरीक्षक मुकेश पाटीदार ने उच्च गुणवत्ता वाले गेहूं को कम दर्जे का बताकर उसकी कीमत कम कर दी, जिससे उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। उनके अनुसार, दोपहर तक जिस गेहूं का भाव करीब 2300 रुपये प्रति क्विंटल मिल रहा था, वही बाद में 2200 से 2250 रुपये प्रति क्विंटल पर खरीदा गया। किसानों ने यह भी कहा कि खरीदी प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी है और नियमों की अनदेखी कर व्यापारियों को फायदा पहुंचाया जा रहा है। वहीं, मंडी निरीक्षक मुकेश पाटीदार ने सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि खरीदी पूरी तरह नियमों के अनुसार की गई है और किसी भी प्रकार की अनियमितता नहीं हुई है।

## दो वाहन चोर गिरफ्तार, वाहन बरामद

**इंदौर।** चंदननगर थाना क्षेत्र में सक्रिय वाहन चोर गिरोह पर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से लाखों रुपये कीमत के चोरी के वाहन बरामद किए गए हैं। पुलिस के अनुसार 7 अप्रैल को गंगा कॉलोनी निवासी अबरार ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि धार रोड स्थित उनकी वाहन रिपेयरिंग दुकान का ताला तोड़कर बदमाश पिकअप वाहन और बैटरियां चोरी कर ले गए। मामले की गंभीरता को देखते हुए थाना प्रभारी तिलक करोले ने विशेष टीम गठित की। जांच के दौरान पुलिस ने मुखबिर सूचना के आधार पर लालू मालीवाड और दिनेश ठाकुर को गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपियों ने अन्य वारदात भी कबूल कीं। उनकी निशानदेही पर दो पिकअप वाहन, एक मोटरसाइकिल और बैटरी बरामद की गई। पुलिस के मुताबिक गिरोह के दो अन्य सदस्य संदीप बैरागी और महेश फरार हैं, जिनकी तलाश जारी है।

## कुत्तों को लेकर पड़ोसियों में झगड़ा

**इंदौर।** राऊ इलाके में कुत्तों को लेकर पड़ोसियों के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि मामला पुलिस तक पहुंच गया। महिला ने आरोप लगाया है कि उसके पड़ोसी ने जानबूझकर अपने कुत्ते को उसके चार साल के बेटे पर छोड़ दिया, जिससे बच्चा घायल हो गया। शिकायतकर्ता अभिव्यक्ति पाटीदार ने बताया कि उनके पड़ोसी पंकज माखीजा घर के बाहर कई कुत्तों को रखते हैं और उन्हें वहीं खाना खिलाते हैं। इससे आसपास गंदगी फैलती है और कुत्ते राह चलते लोगों पर भौंकते हैं, जिससे इलाके के लोग लंबे समय से परेशान हैं। रहवासियों ने पहले भी कई बार इस बारे में समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। महिला का कहना है कि जब उन्होंने दोबारा इस मुद्दे पर बात की तो आरोपी गुस्से में डंडा लेकर बाहर आ गया और बहस करने लगा। इसी दौरान उसने कथित तौर पर अपने कुत्ते को बच्चे पर छोड़ दिया, जिससे कुत्ते ने बच्चे को काट लिया। घायल बच्चे को तुरंत इलाज के लिए डॉक्टर के पास ले जाया गया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

# इंदौर में 'वंदे मातरम्' विवाद गहराया रुबीना के बयान से कांग्रेस असहज

### पार्षद ने कहा 'कांग्रेस जाए भाड़ में!' निर्दलीय चुनाव लड़ने का संकेत

**इंदौर।** नगर निगम की बैठक में 'वंदे मातरम्' गाने से इनकार करने के बाद पार्षद रुबीना खान का विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा। ताजा बयान में उन्होंने न केवल अपने रुख पर कायम रहने की बात कही, बल्कि कांग्रेस पार्टी पर भी तीखा हमला बोला। उन्होंने साफ़ कहा कि कांग्रेस जाए भाड़ में! उनके बयानों से पार्टी नेतृत्व असहज नजर आ रहा है। नगर निगम की बैठक के दौरान रुबीना खान ने 'वंदे मातरम्' गाने से इनकार कर दिया था। इस मुद्दे पर सदन में काफी हंगामा हुआ। बाद में मीडिया से बातचीत में भी उन्होंने अपने फैसले का बचाव किया और कहा कि वे अपने धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार ही आचरण करती हैं। मीडिया से बातचीत के दौरान रुबीना खान ने कांग्रेस नेतृत्व पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि उन्हें पार्टी के रुख से कोई फर्क नहीं पड़ता और वे स्वतंत्र रूप से चुनाव जीतने की क्षमता रखती हैं। उनके इस बयान के बाद पार्टी नेताओं ने भी उनसे दूरी बनानी शुरू कर दी है। फिलहाल यह मुद्दा राजनीतिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर चर्चा का विषय बना हुआ है। आने वाले दिनों में कांग्रेस का अंतिम फैसला और बीजेपी की संभावित कार्रवाई इस विवाद की दिशा तय करेगी।

#### पार्टी से बाहर होने के संकेत

इंदौर शहर कांग्रेस अध्यक्ष चिंटू चौकसे ने इस मामले पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि रुबीना खान को खुद को पार्टी से बाहर ही समझना चाहिए। उनके इस बयान से साफ संकेत मिल रहे हैं कि कांग्रेस जल्द ही उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई कर सकती है। रुबीना खान ने स्पष्ट कहा कि उन्हें चुनावी टिकट की कोई चिंता नहीं है। उनका कहना है कि वे अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करेंगी, चाहे पार्टी उनके साथ रहे या नहीं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस के कुछ नेता एक विशेष वर्ग को खुश करने के लिए विरोधाभासी बातें कर रहे हैं।

**निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान–** रुबीना खान ने आगे कहा कि अगर पार्टी उन्हें बाहर करती है, तो वे भविष्य में निर्दलीय चुनाव लड़ेंगी। उनका दावा है कि उनके पास पर्याप्त जनसमर्थन है, जिससे वे राजनीतिक समीकरण बदल सकती हैं। इस विवाद के बाद बीजेपी ने भी कड़ा रुख अपनाया है। पार्टी के नेताओं ने रुबीना खान के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने की तैयारी की बात कही है। इससे मामला और तूल पकड़ सकता है।

## खाने के विवाद में युवक की हत्या सगाई समारोह में हुआ था विवाद

### बायपास रोड पर घेर लिया और डंडों, पेचकस से हमला

**इंदौर।** शहर में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां खुशियों का माहौल अचानक मातम में बदल गया। सगाई समारोह के दौरान शुरू हुआ मामूली विवाद इतना बढ़ गया कि युवक की जान चली गई। घटना तेजाजी नगर थाना क्षेत्र में बुधवार रात 11 बजे की है। पुलिस के अनुसार, महादेव नगर (नार्थ मोहल्ला) निवासी शुभम पिता संगत नाथ अपने परिवार के साथ उमरीखेड़ा में सगाई कार्यक्रम में शामिल होने गया था। कार्यक्रम के दौरान खाने-पीने को लेकर दोनों पक्षों के बीच कहासुनी शुरू हुई, जो जल्द ही झगड़े में बदल गई। बताया जा रहा है कि विवाद के बाद शुभम अपने साथियों के साथ कार्यक्रम से निकल गया। आरोप है कि दूसरे पक्ष के लोगों ने उसे बायपास रोड पर घेर लिया और डंडों, पेचकस से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल शुभम को परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मामले में पुलिस ने तेजी दिखाते हुए शुभम के दोस्त रितिक, करण और एक अन्य युवक को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है। शुरुआती जांच में सामने आया है कि दोनों पक्ष आपस में रिश्तेदार हैं। पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है। मृतक शुभम साधारण परिवार से था। वह दुकानों पर नींबू-मिर्ची बांधकर गुजारा करता था। परिवार में बड़ा भाई मानसिक रूप से अस्वस्थ बताया जा रहा है। पिता गोदाम में काम करते हैं, जबकि मां मजदूरी कर परिवार चला रही है।

## विवाद के बाद भी पुरानी जगह ही खुल सकती है शराब दुकान

### मामला एनटीसी की जमीन का, शिकायत थाने तक पहुंची

**इंदौर।** मालवा मिल के समीप एनटीसी की जमीन पर बुधवार को खुली शराब दुकान को लेकर लगातार विरोध जारी है। विरोध के चलते गुरुवार को दुकान के ताले नहीं खुल पाए। एनटीसी ने दुकान खाली कराने कलेक्टर शिवम वर्मा और तुकोगंज थाने पर शिकायत की थी। इस बीच, ठेकेदार ने पुरानी जगह (मालवा मिल चौराहा) पर दुकान खोलने की तैयारी शुरू कर दी है। नई आबकारी नीति के तहत यह दुकान ठेकेदार हेमेन्द्रसिंह चौहान को 42.40 करोड़ में आवंटित की गई थी। पहले यह दुकान मालवा मिल चौराहा पर संचालित हो रही थी। जिस जगह वर्तमान में दुकान खुली है, वह एनटीसी है। जमीन को लेकर कोर्ट से स्टे भी मिल चुका है। वैसे भी किसी शासकीय जमीन पर दुकान नहीं खोली जाती है। एनटीसी ने इसे गंभीरता से लेते हुए शिकायत की है, इसलिए दुकान हटाई जाना तय है।

#### विधायक भी उग्र हुए

आमतौर पर शांत स्वभाव वाले विधायक महेंद्र हार्डिया ने शांतिपूर्ण ढंग से दुकान को लेकर अपना विरोध जताया था। जब प्रशासन अनजान बना रहा तो वे उग्र हो गए और कलेक्टर, आबकारी अधिकारी को दो टूक शब्दों में कहा कि वे किसी भी हालत में यहां दुकान नहीं लगने देंगे। उनके तेवर देख यह कयास लगाए जा रहे थे कि प्रशासन जरूर गंभीरता से विचार करेगा।

# एयरपोर्ट पर उड़ानों में गड़बड़ी, इंडिगो और स्टार एयर की फ्लाइट्स रद्द हुईं

### यात्रियों ने विरोध जताया, एयरलाइन स्टाफ के साथ तीखी बहस हुई

**इंदौर।** गुरुवार सुबह देवी अहिल्याबाई होल्कर विमानतल पर यात्रियों को भारी अव्यवस्था का सामना करना पड़ा। अहमदाबाद से आने-जाने वाली इंडिगो की फ्लाइट तकनीकी खराबी के चलते अचानक रद्द कर दी गई, वहीं स्टार एयर ने भी अपनी मुंबई और गोंदिया रूट की उड़ानें निरस्त कर दीं। इस स्थिति ने एयरपोर्ट पर अफरा-तफरी का माहौल बना दिया। एयरपोर्ट प्रबंधन के अनुसार, इंडिगो की फ्लाइट संख्या 6ई-7173 रोजाना सुबह 8:10 बजे अहमदाबाद से इंदौर पहुंचती है और यही विमान 6ई-7174 बनकर सुबह 8:45 बजे वापस रवाना होता है। गुरुवार को अहमदाबाद एयरपोर्ट पर उड़ान से पहले विमान में तकनीकी खराबी पाई गई। इंजीनियरों द्वारा जांच के बाद इसे उड़ान के लिए सुरक्षित नहीं माना गया। इसके चलते एहतियातन दोनों उड़ानों को रद्द करने का फैसला लिया गया।

#### यात्रियों में नाराजगी

अहमदाबाद जाने वाले कई यात्री सुबह 7 बजे से ही एयरपोर्ट पहुंच गए थे। चेक-इन के दौरान अचानक फ्लाइट रद्द होने की जानकारी मिलने पर यात्रियों में गुस्सा फूट पड़ा। यात्रियों का कहना था

कि उन्हें आखिरी समय पर सूचना दी गई, जिससे उनके जरूरी काम प्रभावित हुए और कई लोगों की कनेक्टिंग फ्लाइट्स भी छूट गईं। कुछ यात्रियों ने एयरलाइन स्टाफ के साथ तीखी बहस भी की, जिससे कुछ समय के लिए माहौल तनावपूर्ण हो गया। स्थिति बिगड़ती देख एयरपोर्ट अधिकारियों ने हस्तक्षेप किया। यात्रियों को रिफंड, टिकट री-बुकिंग और अन्य उपलब्ध उड़ानों में समायोजन के विकल्प दिए गए। इसके बाद धीरे-धीरे हालात सामान्य हुए।

**स्टार एयर से परेशानी–** इस बीच स्टार एयर ने भी अपने इंदौर-मुंबई-गोंदिया रूट की चारों उड़ानें ऑपरेशनल कारणों का हवाला देते हुए रद्द कर दीं। ये उड़ानें दोपहर 1:40 बजे मुंबई से इंदौर आने, 2:10 बजे इंदौर से गोंदिया जाने, शाम 5:20 बजे गोंदिया से वापसी और 5:50 बजे इंदौर से मुंबई के लिए निर्धारित थीं। इन उड़ानों के निरस्त होने से यात्रियों की परेशानी और बढ़ गई। पिछले कुछ दिनों से स्टार एयर की उड़ानों के बार-बार रद्द होने की घटनाएं सामने आ रही हैं।

#### अनिश्चितता का बना माहौल

हालांकि एयरपोर्ट प्रबंधन का दावा है कि अन्य उड़ानों का संचालन सामान्य रूप से जारी है, लेकिन लगातार हो रही रद्दीकरण की घटनाओं ने यात्रियों के बीच अनिश्चितता और चिंता का माहौल बना दिया है। इससे यात्रियों का भरोसा प्रभावित हो रहा है। खासकर वे लोग अधिक परेशान हैं, जिन्होंने व्यापारिक काम या मेडिकल इमरजेंसी के चलते यात्रा की योजना बनाई थी।

# मैदान में गंदगी देख आयुक्त सख्त वाइन शॉप पर चालान के निर्देश

### झोन-6 में निरीक्षण, बेहतर व्यवस्था पर महिला ने सम्मान किया

**इंदौर।** नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने शुक्रवार सुबह झोन 6 के विभिन्न वार्डों का दौरा कर सफाई व्यवस्था और वाटर बॉडी का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बापट चौराहा स्थित जलाशय की साफ-सफाई, रख-रखाव और जल संरक्षण उपायों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त ने झोनल कार्यालय के सामने स्थित स्कूल परिसर में भी स्वच्छता की स्थिति देखी और नियमित सफाई सुनिश्चित करने को कहा। इसके बाद कुलकर्णी नगर, पाटनीपुरा और मालवा मिल क्षेत्रों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने साफ-सफाई में निरंतरता बनाए रखने पर जोर दिया। पतरे की चाल स्लम बस्ती और सीटीपीटी (कम्युनिटी टॉयलेट) की स्थिति का भी बारीकी से निरीक्षण किया गया। यहां

बेहतर साफ-सफाई से संतुष्ट एक महिला ने आयुक्त का तिलक लगाकर और पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया। हालांकि,पतरे की चाल के पास मैदान में संचालित वाइन शॉप के आसपास गंदगी और डिस्पोजल सामग्री मिलने पर आयुक्त सख्त नजर आए। उन्होंने संबंधित दरोगा को फटकार लगाते हुए तत्काल चालानी कार्रवाई और क्षेत्र में साफ-सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

## ऑनलाइन ठगी की रिपोर्ट 7 साल बाद, फ्रेंचाइजी के नाम पर फ्रॉड

**इंदौर।** पुलिस की तमाम समझाइश के बाद भी लोग ठगों की बातों में आकर धोखाधड़ी के शिकार हो रहे हैं। इसी क्रम में बुधवार को ऑनलाइन फ्रॉड के दो अलग-अलग मामले सामने आए हैं, जिनमें पुलिस ने अब कार्रवाई शुरू की है। राजेंद्र नगर थाना पुलिस ने करीब 7 साल बाद एटीएम क्लोनिंग से जुड़े फ्रॉड में एफआईआर दर्ज की है। पीड़ित मुकेश नायक, जो कुंदन नगर के रहने वाले हैं, ने बताया कि मई 2019 में उनके बैंक खाते से बिना जानकारी के 1.20 लाख रुपए निकाल लिए गए थे। यह रकम जमशेदपुर में एटीएम से 7-8 मई के बीच 12 बार में निकाली गई थी। मुकेश को इस धोखाधड़ी का पता तब चला जब बैंक से किस्त बाउंस होने की सूचना मिली। उन्होंने तुरंत शिकायत दर्ज कराई, लेकिन लंबे समय तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। कोरोना काल और थाने में लगातार अधिकारियों के बदलने के कारण मामला अटका रहा। हाल ही में टीआई से मुलाकात के बाद आखिरकार पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एमआईजी थाना क्षेत्र में होटल फ्रेंचाइजी दिलाने के नाम पर ठगी का मामला सामने आया है। अंबेडकर नगर निवासी रवि शर्मा से आरोपी शिवराज सिंह परिहार उर्फ जोजो ने संपर्क कर खुद को भिंड का निवासी बताया और रेस्टोरेंट फ्रेंचाइजी दिलाने का झांसा दिया। आरोपी ने अलग-अलग किश्तों में रवि से कुल 2.73 लाख रुपए ऐंठ लिए। जब वादा पूरा नहीं हुआ तो पीड़ित ने साइबर सेल में शिकायत की, जिसके बाद मामला थाने पहुंचा और पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। दोनों मामलों में पुलिस अब जांच कर रही है और आरोपियों की तलाश जारी है।

# 'स्वच्छ वार्ड रैंकिंग' 2025-26 के विजेताओं का सम्मान हुआ

### शहर का वार्ड 63 बना इंदौर का श्रेष्ठ वार्ड

**इंदौर।** स्वच्छता के क्षेत्र में देशभर में पहचान बना चुके इंदौर में 'स्वच्छ इंदौर वार्ड रैंकिंग 2025-26' के विजेताओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। रविन्द्र नाट्य गृह में आयोजित इस कार्यक्रम में महापौर पुष्यमित्र भार्गव एवं आयुक्त क्षितिज सिंघल ने विजेता वार्डों, पार्षदों, संस्थाओं एवं सफाई मित्रों को सम्मानित किया।

प्रतियोगिता में इंदौर के वार्ड क्रमांक 63 ने प्रथम, वार्ड 49 ने द्वितीय एवं वार्ड 44 ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं उत्कृष्ट पार्षदों में पराग कौशल प्रथम, राजीव जैन द्वितीय और राहुल जायसवाल तृतीय रहे,जबकि वार्ड 59 की रूपाली पेंढारकर को विशेष सम्मान दिया गया। देपालपुर वार्ड रैंकिंग में वार्ड 14, 12 एवं 4 ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाले

सफाई मित्रों,ड्रेनेज कर्मचारियों एवं विभिन्न संस्थानों को भी प्रशस्ति पत्र व उपहार देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत नागरिकों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई तथा 'जल रथ' को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि यह प्रतियोगिता जनभागीदारी का श्रेष्ठ उदाहरण है, वहीं आयुक्त क्षितिज सिंघल ने नागरिकों से स्वच्छता को जीवनशैली में अपनाने की अपील की।

# बीजेपी नेता ने महिला को पीटा पार्किंग को लेकर हुआ विवाद

**इंदौर।** जूनी इंदौर इलाके में महिला के साथ विवाद और गुंडागर्दी के मामले में पुलिस ने बीजेपी से जुड़े नेता और उसके साथी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। यह पूरा विवाद अवैध कार पार्किंग से शुरू हुआ, जो बाद में मारपीट और धमकी तक पहुंच गया। बीके सिंधी कॉलोनी निवासी देवी ठारवानी ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है कि 27 मार्च को आरोपी सचिन जेसवानी और नरेंद्र सोनी उनके घर में घुस आए। उन्होंने जबरन वीडियो बनाया, धमकाया और मारपीट की। महिला का कहना है कि वे पापड़ बनाने का काम करती है और उनके यहां अखिलेश नामदेव किराए से रहता था।

**वीडियो वायरल हुआ–** 25 मार्च को जब अखिलेश मकान खाली कर रहा था, तब उसने अपनी एक्टिवा सड़क पर खड़ी की थी। इसी बात को लेकर सचिन जेसवानी से विवाद हुआ और उसने अखिलेश के साथ मारपीट कर दी, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर भी वायरल हुआ। महिला के अनुसार, 27 मार्च की घटना के बाद भी मामला शांत नहीं हुआ। 7 अप्रैल को आरोपी फिर उनके घर पहुंचा और थाने चलने को लेकर दबाव बनाने लगा। मना करने पर उसने दोबारा वीडियो बनाना शुरू किया और शिकायत करने पर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी।

**फोन आने पर लिखी रिपोर्ट–** बताया जा रहा है कि दोनों पक्ष पहले भी थाने पहुंचे थे, लेकिन उस समय कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस दौरान राजनीतिक दबाव की भी बात सामने आई। आरोप है कि क्षेत्रीय स्तर के नेताओं के फोन आने के बाद पुलिस ने आखिरकार कार्रवाई की। सूत्रों के मुताबिक, सचिन जेसवानी बीजेपी मंडल वार्ड 65 का पूर्व अध्यक्ष रह चुका हैं। पार्टी के अंदरूनी विवाद और गुटबाजी को भी इस पूरे मामले से जोड़कर देखा जा रहा है।

## संपादकीय

# यूसीसी : मॉडल ड्राफ्ट क्यों नहीं?

मध्यप्रदेश में डॉ. मोहन यादव सरकार ने राज्य में दिवाली से पहले समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने का फैसला कर लिया है। गृह विभाग को 6 में इसका ड्राफ्ट तैयार करने के आदेश दिए गए हैं। इसे लागू करने के पहले उन राज्यों के यूसीसी नियमों का अध्ययन किया जाएगा, जैसे कि उत्तराखंड और गुजरात, में इसे कैसे लागू किया गया है। इसके लिए एक उच्चस्तरीय कमेटी बनाई जाएगी। चर्चा है कि उत्तराखंड में बनी कमेटी की अध्यक्ष और पूर्व में सर्वोच्च न्यायालय की न्यायाधीश रहीं रंजना प्रकाश देसाई इसकी अध्यक्ष हो सकती हैं। हालांकि इस बारे में सरकार कोई निर्णय अभी नहीं किया है। इस कमेटी में 5-6 सदस्य शामिल होंगे, जो हाईकोर्ट के पूर्व जज, रिटायर आईएएस, सोशल वर्कर, अधिवक्ता, विवि के प्रतिनिधि व वरिष्ठ वकील होंगे। दूसरी तरफ कांग्रेस अभी इसका विरोध इस आधार पर कर रही है कि यूसीसी को सभी की सहमति से लागू किया जाए। इसी संदर्भ में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि जब एक देश, एक निशान, एक प्रधान, 1951 में कहा गया था, वही अब होगा। आने वाले समय में क्या हिंदू, क्या मुसलमान, क्या ऊंचा-नीचा, क्या अच्छा-बुरा, सबके लिए कानून बराबर होना चाहिए। इसीलिए कॉमन सिविल कोड की तरफ भी हमारी सरकार धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। इसमें दो राय नहीं कि भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में विभिन्न धर्मों और समुदायों के लिए अलग अलग कानून क्यों हों? संविधान के अनुच्छेद 44 में भी संविधान निर्माताओं ने साफ कहा है कि देश में सभी नागरिकों के लिए समान संहिता लागू होनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट भी कह चुका है कि देश में समान नागरिक संहिता लागू करने का यही सही समय है। देश में यूसीसी का विरोध मुख्यतः मुस्लिम समुदाय द्वारा ही किया जा रहा है और इसका आधार यह है कि यूसीसी उनके पर्सनल लॉ (शरिया) को खत्म करता है। जबकि वास्तव में यूसीसी महिलाओं को और सभी समुदायों को पहले की तुलना में ज्यादा अधिकार देता है। जो विरोध हो रहा है, वह वोट बैंक की राजनीति ज्यादा है। सरकार को इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। जहां तक यूसीसी की बात है तो इसके लागू होने के बाद शादी का पंजीकरण अनिवार्य होगा, तलाक के नियम सभी धर्मों के लिए एक समान होंगे और पैतृक संपत्ति में बेटियों को बराबर का हक मिलेगा। बहु विवाह पर पूरी तरह रोक लगने की संभावना है, जैसा कि गुजरात और उत्तराखंड में किया गया है। दरअसल, यूसीसी के पक्ष में सबसे मजबूत तर्क महिलाओं के अधिकार का ही है। शरिया कानून में उत्तराधिकार, बहु विवाह इत्यादि मुद्दे लैंगिक असमानता को बढ़ावा देते हैं, जबकि यूसीसी इन आधारों पर होने वाली सभी किस्म की असमानताओं को खत्म कर एक समान, निष्पक्ष और सांवैधानिक मूल्यों पर आधारित ढांचा प्रदान कर सकता है। दूसरे, उत्तराखंड में यूसीसी लागू हुए सवा साल के लगभग हो रहा है, वहां अभी तक ऐसा कोई मामला सामने नहीं आया है कि किसी के पर्सनल लॉ का हनन हुआ हो। गोवा में तो यह 1867 से लागू है। वहां भी करीब 12 फीसदी मुसलमान रहते हैं, उनके हितों पर कोई आंच नहीं आई तो यहां कौन-सा पहाड़ टूटेगा। वैसे भी मप्र में मुसलमानों की संख्या करीब 9 फीसदी है और 10-15 सीटों पर उनका प्रभाव है। ऐसे में मुस्लिम विरोध का कुछ खास मतलब नहीं है। यह समझना मुश्किल है कि अगर कांग्रेस सिर्फ मुस्लिम वोटों को रिझाने के लिए इसका विरोध कर रही है तो उसे इसका क्या लाभ होगा? दूसरे, केन्द्र सरकार को इस मामले में एक मॉडल ड्राफ्ट तैयार करना चाहिए ताकि हर राज्य में अलग-अलग कानून न हों।

# अनिश्चय के भंवर में युद्धविराम का भविष्य

**नजरिया**

**अवधेश कुमार**

लेखक दिल्ली निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कुल 932 घंटे 35 मिनट यानी 40 दिनों के युद्ध में खरबों की क्षति के बाद खाड़ी में अस्थायी दो सप्ताह के संघर्ष विराम की घोषणा हुई है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की घोषणा के बाद ईरान ने भी इसे स्वीकार कर लिया तथा इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतान्याहू ने कहा है कि वे ट्रंप के कदमों से सहमत हैं। हालांकि यह संघर्ष विराम है संघर्ष की समाप्ति नहीं। ईरान की ओर से कहा गया है कि उसने जो 10 बिंदु दिए अमेरिका उन पर विचार कर रहा है। अमेरिका ने कहा है कि हमने जो 15 शर्तें रखीं उन पर ईरान विचार कर रहा है। यानी दोनों ने शर्तों को स्वीकारने की घोषणा नहीं की है। दूसरे , इजरायल ने ईरान पर हमले रोकने की बात स्वीकारते हुए कहा है कि लेबनान समझौते से बाहर है। ईरान के 10 बिन्दुओं में लेबनान में हिज्बुल्लाह पर हमले रोकने की शर्त भी है। ट्रंप का कथन है कि युद्धविराम के बाद हम दीर्घकालिक शांति तथा पश्चिम एशिया के स्थायी समझौते की ओर बढ़ेंगे। क्या वाकई पश्चिम एशिया की जटिल समस्या का समाधान संभव है?

दुनिया भर में निहित स्वार्थी नैरेटिव चलाने वाले पहले दिन से अमेरिका इजरायल को विश्व खलनायक एवं ईरान को योद्धा तथा निर्दोष पीड़ित साबित करते रहे हैं। सोच यह है कि ट्रंप को झुकना पड़ा एवं ईरान ने अपनी शर्तों पर संघर्ष विराम माना तो साफ है कि ऐसे तत्व शांति नहीं कुछ और चाहते हैं। ट्रंप ने 6 अप्रैल को अपने पोस्ट में ईरान के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए स्पष्ट धमकी दी थी कि अगर होर्मूज जलडमरूमध्य नहीं खोला तो एक ही पैकेज में उसके ऊर्जा संस्थान,आधारभूत संरचना, पुल सभी ध्वस्त होंगे। दिख रहा था कि ट्रंप दबाव की तरह भले धमकी का इस्तेमाल कर रहे हैं , वे युद्ध से वापसी भी चाहते थे, लेकिन उनके तेवर इतने कड़े थे और उन्होंने इसके प्रमाण दिए थे तो ईरान का अड़ियल रवैये पर पुनर्विचार करना स्वाभाविक था। ईरान अड़ता तो उसका विनष्ट होना निश्चित था। अगर भयानक रक्तपात व अनवरत युद्ध वाले पश्चिम एशिया समस्या का समाधान हो जाए तो विश्व में शांति स्थापना के ऐसे अध्याय की शुरुआत होगी जिसकी शायद कल्पना भी नहीं की जा सकती। किंतु तह साकार होता नहीं दिखता। इजरायल को लेकर ईरानी इस्लामी शासन की विचारधारा, व्यवहार , लेबानन, गाजा, इराक से यमन तक उसके द्वारा खड़े आतंकवादी समूह की गतिविधियां, आंतरिक राजनीति तथा यहूदी इस्लाम के बीच मजहबी विवाद आदि को आधार बनाएं तो यह लक्ष्य अत्यंत कठिन है।

तत्काल इतना हुआ है कि ईरान ने परिस्थितियां देखकर होर्मूज जलडमरूमध्य में जहाजों की आवाजाही को स्वीकृति दी है किंतु यह भी कहा है कि ईरानी सेना के साथ समन्वय और तकनीकी शर्तों के आधार पर होगा। समस्या यही है। उसके सबसे बड़े सहयोगी चीन की समझाइश का तत्काल असर है। उसकी 10 शर्तों में ईरान जलडमरूमध्य

के नियमन और नियंत्रण का उसका अधिकार स्वीकार करना, प्रति जहाज 2 करोड़ डॉलर टोल लेना भी शामिल है। हालांकि उसने कहा है कि इसमें ओमान का भी हिस्सा होगा। उसने ईरान पर भविष्य में हमले न करने तथा सुरक्षा की गारंटी, उसके न्यूक्लियर कार्यक्रम को जारी रखने की अनुमति, युद्ध की पूरी क्षतिपूर्ति, क्षेत्र से अमेरिकी सैनिकों की उपस्थिति की समाप्ति, लेबनान में सारे हमले रोकने आदि उसकी शर्तों ऐसी है जो स्वीकार नहीं हो सकती। उसने नहीं कहा है कि हिजबुल्लाह,हमास या हुती इजरायल पर हमले रोक देंगे। बावजूद रोकने के बाद अमेरिका तुरंत हमला शायद ही करे।

28 फरवरी को आरंभ युद्ध में? ईरान को ऐसी अपूरणीय क्षति हुई है जिसकी उसने दुःस्वप्नों में भी कल्पना नहीं की थी। यह इस युद्ध का कटु सच है जिसको नकारने के बाद आप सही निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते। युद्ध में 3721 मौतें हुई। इनमें ईरान में सबसे ज्यादा 2076, लेबनान में 1461और अरब देशों में 156 लोग मारे गए। अरब में इराक में 109, कुवैत में 7,बहरीन में 3, सऊदी अरब में 2, संयुक्त अरब अमीरात में 12, सीरिया में 4 और ओमान में 3 मौतें हुई। इसके समानांतर इजराइल में 26 लोग मारे गए तथा 13 अमेरिकी सैनिक भी। एक फ्रांसीसी सैनिक की मृत्यु हो गई। ईरान में कुल 13 हजार स्थानों पर बम गिरे हैं। कल्पना करिए कि कैसा विध्वंस हुआ है। उसकी न्यूक्लियर क्षमता वाले स्थान ध्वस्त किए गए, मिसाइल बनाने के केंद्र काफी हद तक विनष्ट हुए, उसके लिए जो स्टील और अन्य सामग्रियां चाहिए वहां भी विध्वंस हुआ। जिन स्थानों में अंदर प्रवेश करना कठिन था उनके गेट या अन्य दिखने वाले जगहों पर बम गिराकर जितना ध्वस्त किया जा सकता था उतना करके छोड़ दिया गया। आगे के लिए अमेरिका और इजरायल ने काफी विचार कर विनाश के लिए ऐसे स्थान चिन्हित किए थे जिनमें उसके महत्वपूर्ण बिजली केंद्र , पूल, संचार संस्थान, आवश्यक सेवाओं की आपूर्तियों के महत्वपूर्ण केंद्र आदि थे। 28 फरवरी के हमले के बाद ईरान के इतिहास का सबसे बड़ा आघात अयातुल्लाह अलखामेनेई, उनके परिवार व रिश्तेदारों के महत्वपूर्ण सदस्य तथा सत्ता शीर्ष के एक साथ करीब तीन दर्जन लोगों का मार दिया जाना था। अचानक एक रिक्ति आ गई। यह ऐसे ही था जैसे ईरान एक साथ अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके महत्वपूर्ण मंत्रियों तथा इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतान्याहू सहित प्रमुख मंत्रियों और सैन्य अधिकारियों को मार डाले। बीच में जो भी सामने दिखता सेना प्रमुख, खुफिया प्रमुख,आईआरजीसी प्रमुख, पुलिस प्रमुख, बासित फोर्स प्रमुख, उनके उप प्रमुख , इनके उत्तराधिकारी सब मारे जा रहे थे। मोजतबा खामेनेई को उत्तराधिकारी घोषित किया गया लेकिन अभी तक वे नहीं दिखे और जैसी सूचना है इतनी बुरी तरह घायल हुए हैं कि उनका उठना कठिन है।

पूरा कमान आईआरजीसी जैसी इस्लामी शक्तियों के हाथ था, जिसनेअपने जवानों के एक इमाम के साथ नमाज पढ़ने का वीडियो जारी किया। जिसका संदेश था कि हम इस्लाम के मुजाहिद हैं, उसके लिए लड़ रहे हैं और हम शहीद होंगे तो मजहब के लिए जिसके लिए हम पैदा हुए हैं। सूत्र नागरिक शासन के हाथों होता तो शायद संघर्ष राम पहले हो जाता। मसूद पेजेश्कियन ने सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात आदि पर मिसइल हमले के लिए क्षमा मांगी किंतु उसके कुछ ही घंटे बाद फिर हमले हो गए। इससे साफ था कि इस्लामी क्रांति के बाद खामेनेई द्वारा सामान्य सेना, सुरक्षा, प्रशासन राजनीति के समानांतर शीर्ष भूमिका में मजहबी सेना -आंतरिक सुरक्षा, प्रशासन, राजनीतिक व्यवस्थायें खड़ी कीं कमान उनके हाथों में है। यही भविष्य की शांति में सबसे बड़ी समस्या होगी। मजहब आने के बाद किसी भी मुस्लिम देश के साथ युद्ध को निर्णायक अवस्था में पहुंचाना लगभग असंभव हो जाता है। समस्या का मूल ईरानी इस्लामी शासन द्वारा इजराइल के अस्तित्व को केवल अस्वीकार करना ही नहीं उसे समाप्त करने का राष्ट्रीय लक्ष्य बनाना है। इसके लिए यमन की हुती से लेकर गाजा में हमस, लेबनान में हिजबुल्ला, इराक और अन्य जगह उसने आतंकवादी समूह खड़े किए और उनको सरेआम पूरी मदद देता है। यह संगठन मिसाइल और ड्रोन से हमले करते हैं। ईरान की इस्लामी व्यवस्था इजरायल को ही नहीं, संपूर्ण यहूदी समुदाय को इस्लाम का दुश्मन मानता है और उनकी सीधी घोषणा है कि आप हमारे हो या तुम्हारा पूरी तरह नाश करेंगे। इसमें इजरायल के सामने क्या विकल्प हो सकता है? ईरान पड़ोसी अरब देशों के विरुद्ध भी हमलावर रहता है। युद्ध के दौरान उसने इजराइल से ज्यादा संयुक्त अरब अमीरात पर ड्रोन हमले किए। अगर अमेरिका अकेले एकपक्षीय तरीके से ईरान से कोई समझौता करता है तो अरब देशों के सामने समस्या पैदा होगी। वे ईरानी सैन्य शक्ति के भय वाली स्थिति में रहना नहीं चाहते। सऊदी अरब,संयुक्त अरब अमीरात,बहरीन ओमान, कुवैत, कतर सभी चाहते थे कि अमेरिका वहां लंबा युद्ध करे और ईरान को सैन्य और आर्थिक दृष्टि से पंगु बनाकर समझौता करने के लिए मजबूर कर दे।अगर ईरान के स्थायी रुप से मजबूर होने की संभावना नहीं बनी तो ये देश भी अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने जिसमें मिसाइल से लेकर न्यूक्लियर शक्ति बनने का लक्ष्य शामिल होगा, दिशा में तेजी से अवसर होंगे। अरब के अनेक देशों ने इजरायल के अस्तित्व को घोषित या अघोषित स्वीकार कर लिया है। ईरान और उसके पोषित हथियारबंद समूह ऐसा कभी नहीं कर सकते। पर हमले के कुछ समय पूर्व तक पूरे ईरान में हजारों लोग इस्लामी शासन के विरुद्ध सड़कों पर थे। उनको बेरहमी से कुचला गया, फांसी दी गई। मुद्रास्फीति 120% से ऊपर चली गई थी। रियाल की कीमत डेढ़ लाख डॉलर तक थी।आज रियाल 0.000070 भारतीय रुपये के बराबर है। देश में त्राहि-त्राहि थी। कुर्द, अज़रबैजानी, बलोच, अरबी आदि का विद्रोह अपनी जगह है। ईरान के कुह-ए- सियाह क्षेत्र में फंसे दो पायलटों को अमेरिका द्वारा छुड़ाने के बाद वहां के लोगों के विरुद्ध आईआरजीसी व पुलिस बलों की कार्रवाई जारी है। इस क्षेत्र के लोग इस्लामी गणराज्य के विरुद्ध आवाज उठाते रहे हैं। तो ईरान के अंदर आने वाले समय में बड़ा उबाल भी देखने को मिलेगा। मोजतबा खामेनेई सत्ता संभालने लायक नहीं हुये? तो शीर्ष स्तर पर भी व्यापक सत्ता संघर्ष देखने को मिलेगा। इसमें संघर्ष विराम का भविष्य बिल्कुल अनिश्चित है।

# सबरीमाला : संविधान और स्त्री-शक्ति का भारतीय विमर्श

**मुद्दा**

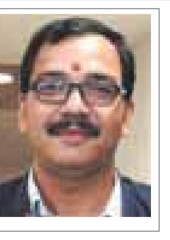

**डॉ. मयंक चतुर्वेदी**

लेखक केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड एडवाइजरी कमेटी के पूर्व सदस्य एवं पत्रकार हैं।

भारतीय समाज में धर्म, परंपरा और संवैधानिक मूल्यों का संबंध अत्यंत गहन और बहुआयामी है। सबरीमाला मामला इसी जटिल संबंध का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जहाँ एक ओर धार्मिक आस्था और परंपरा का प्रश्न है, तो दूसरी ओर समानता, गरिमा और अधिकारों की संवैधानिक व्याख्या सामने आ खड़ी हुई। यह विवाद भले ही महिलाओं के मंदिर प्रवेश को लेकर शुरू हुआ है किंतु यह अपने आप में कई व्यापक अर्थ रखता है, जिसमें भारतीय स्त्री-विमर्श, सांस्कृतिक चेतना और न्यायिक दृष्टिकोण के बीच संवाद सभी कुछ समाहित है।

इस संबंध में उच्चतम न्यायालय द्वारा जो निर्णय सुनाया गया, उस निर्णय के बीच सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति बी. वी. नागरत्ना ने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए हैं, उनका कहना है कि क्या मासिक धर्म के आधार पर महिलाओं के प्रवेश पर रोक 'अस्पृश्यता' की श्रेणी में आती है? न्यायमूर्ति नागरत्ना कहती है, 'इस मामले में 'अनुच्छेद 17' यानी छुआछूत के खिलाफ अधिकार पर दलील किस तरह पेश की जाए, यह मेरी समझ से बाहर है। एक महिला होने के नाते मैं यह कहना चाहूंगी कि ऐसा नहीं हो सकता कि हर महीने तीन दिन तक तो महिला को 'अछूत' माना जाए और चौथे दिन अचानक कोई 'अछूतपन' न रह जाए।'

न्यायमूर्ति नागरत्ना का यह कथन है कि 'भेदभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता' वास्तव में इस पूरे विमर्श का यही केंद्रीय बिंदु है। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 17 समानता, भेदभाव-निषेध और अस्पृश्यता उन्मूलन की बात करते हैं, जबकि अनुच्छेद 25 धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करता है। इस प्रकार, सबरीमाला प्रकरण इन संवैधानिक मूल्यों के बीच संतुलन का प्रश्न बन जाता है।

इसी तरह से अन्य कुछ प्रश्न उठाने का कार्य यहां न्यायमूर्ति बी. वी. नागरत्ना दिखाई देती हैं, तब केंद्र सरकार की ओर से तुषार मेहता ने यह तर्क दिया कि सबरीमाला की परंपरा को 'अस्पृश्यता' कहना ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं है, क्योंकि अस्पृश्यता मूलतः जाति-आधारित सामाजिक कुरीति रही है। उन्होंने इसे भगवान अयप्पा की नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पर आधारित धार्मिक परंपरा बताया, जिसका सम्मान किया जाना चाहिए। तब इस पूरे विमर्श का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष जिस रूप में सामने आया, वह है नारी का समग्रता से सम्मान।

अब प्रश्न यह है कि क्या भारतीय शास्त्रों में, ज्ञान परंपरा में, हिन्दू व्यवस्था में, सनातन धर्म में स्त्री का स्थान नीचा, ओछा या कमजोर है? इसका उत्तर सहज है कि बिल्कुल भी नहीं, बल्कि विश्व भर की प्राचीन सभ्यताओं में जो अद्यतन है, उनमें तुलनात्मक रूप से हिन्दू सनातन धर्म में स्त्री को अत्यधिक मान, बराबरी का हक दिया गया है । इस संबंध में देवी आराधना को देखा जा सकता है, जोकि भारत में सर्वत्र एक रूप में सर्वव्यापी है। यदि हम दुर्गा सप्तशती का अध्ययन करें, तो स्पष्ट होता है कि स्त्री ब्रह्मांड की मूल शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। संपूर्ण दुर्गासप्तशती ही स्त्री महात्म, नारी सम्मान, श्रद्धा और उसके प्रति समर्पण से पूर्ण है।

'या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥' (दुर्गा सप्तशती, अध्याय 5), इस प्रकार के मंत्रों की पूरी श्रंखला है। विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः॥ के माध्यम से कहा गया है कि 'हे देवी ! संसार की समस्त विद्याएं तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। इसी प्रकार, विश्व की समस्त स्त्रियां (सकला जगत्सु - संसार में) तुम्हारा ही रूप हैं। हे अंब (माता) ! इस पूरे जगत को तुमने ही आच्छादित (पूरित) किया है। तुम्हारी स्तुति भला कौन कर सकता है? तुम तो स्तुति के योग्य शब्दों से भी परे हो।' कुल मिलाकर समस्त जगत में जो कुछ भी है, वह स्त्री-शक्ति से ही व्याप्त है। यही भारतीय दर्शन का मूल तत्व है जो हमें बताता है कि स्त्री ही सृष्टि की आधारभूत ऊर्जा है।

इसी भाव को देवी भागवत पुराण अभिव्यक्त करता है, 'त्वमेव सृष्टिः त्वमेव पालनं, त्वमेव संहारकारिणी।' अर्थात सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार–तीनों स्त्री-शक्ति के अधीन हैं। (स्कंध 1, अध्याय 8) । वैदिक साहित्य में भी स्त्री के इसी उच्च स्थान का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद (मंडल 10, सूक्त 125) में वाक् सूक्त के माध्यम से स्त्री स्वयं को ब्रह्मांड की अधिष्ठात्री शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है-

'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्...' ऋग्वेद (10.125.3) के 'वाक् सूक्त' का एक अत्यंत महत्वपूर्ण मंत्र है, जो ज्ञानशक्ति (देवी वाक्) की सर्वोच्चता बताता है। इसका अर्थ हुआ, 'मैं (वाक्/शक्ति) राष्ट्र की स्वामिनी हूँ, समस्त धनों (वसूनाम्) को इकट्ठा करने वाली (संगमनी) हूँ और श्रेष्ठ ज्ञान रखने वाली (चिकितुषी) हूँ। इस प्रकार से यह सर्वोच्च चेतना या वाणी के रूप में स्वयं को राष्ट्र के ऐश्वर्य और ज्ञान का मूल बताती है।

मनुस्मृति में तो यहां तक कहा गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' (अध्याय 3, श्लोक 56)। जहां स्त्री की पूजा होती है, वहीं देवता निवास करते हैं। वस्तुतः कहना होगा कि यह श्लोक भारतीय समाज की मूल संरचना को दर्शाता है। आधुनिक विद्वान पैट्रिक ओलिवेल (Manus Code of La2, पृ. 78) भी इसे स्त्री के सम्मान का प्रमाण मानते हैं।

हां, यह जरूर है कि अक्सर रामचरितमानस की एक चौपाई को लेकर भ्रम फैलाया जाता है। परंतु गोस्वामी तुलसीदास की भाषा और संदर्भ को समझे बिना उसका अर्थ निकालना उचित नहीं है। उक्त चौपाई में 'ताड़ना' का अर्थ अवधी में 'देखभाल' या 'संरक्षण' होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 214) इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं। अब प्रश्न यह है कि यदि भारतीय परंपरा स्त्री को इतना उच्च स्थान देती है, तो सबरीमाला जैसी परंपराएँ क्यों? इसका उत्तर सामाजिक और जैविक यथार्थ में निहित है। मासिक धर्म एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसमें महिलाओं को शारीरिक कष्ट, थकान और असुविधा होती है।

इस संदर्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का 2022 का संदर्भ देख सकते हैं, जिसके अनुसार लगभग 70 फीसद महिलाएँ इस दौरान किसी न किसी प्रकार की पीड़ा अनुभव करती हैं। प्राचीन काल में स्वच्छता के साधनों के अभाव के कारण महिलाओं को विश्राम देने के उद्देश्य से कुछ परंपराएँ विकसित हुईं। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि 'विश्राम हेतु अलग रखना' और 'अस्पृश्य मानना' दो अलग अवधारणाएँ हैं। भारतीय समाज में मूल भावना संरक्षण और स्वास्थ्य की थी, न कि भेदभाव की।

यहां यह भी समझना होगा कि देवता के दर्शन या उसके पास जाने के लिए तन और मन दोनों की पवित्रता की अनिवार्यता भारतीय परंपरा में अनवार्य बताई गई है, एक बार को हम स्त्री के संबंध में इस विमर्श को छोड़ भी दें तो क्या पुरुषों को यह अनुमति मिल सकती है कि वह मंदिर में जाए, यदि उसके जननांग से रुक-रुक कर मूत्र बूंद-बूद में शरीर के बारह आ रहा है, तो क्या वह स्वयं ही या उसके परिवार जन या मंदिर में यह जानकर की उसका उसके मूल विसर्जन पर अंकुश नहीं, क्या उसे मंदिर में प्रवेश मिलेगा? वैज्ञानिक भाषा में तो वह पानी ही तो है!

इसी तरह से मल त्याग या शरीर से लगातार थूक के निकलने एवं नाक का बहना है, होने को तो यह एक क्रिया ही है, क्या तब मंदिर में प्रवेश मिलेगा? अरे, सभी हिन्दू घरों में यह सामान्य परंपरा है जिसके लिए कोई किसी से कुछ नहीं कह रहा, स्नान के बाद पूजा करने से पूर्व घर के सदस्य चाहे जहां, इधर-उधर नहीं बैठते हैं। कोई बिना नहाए उनसे गले लगना भी चाहे तो उसे पूजा सम्पन्न होने तक इंतजार करना होता है। फिर यह सबरीमाला प्रकरण तो करोड़ों लोगों की आस्था से जुड़ा हुआ है।

अतः यहां समझना यही है कि भारतीय दर्शन हमें यह सिखाता है कि स्त्री स्वयं 'शक्ति' है। वह 'जननी' है, 'पालनकर्ता' है और 'सृष्टि की आधारशिला' है। 'स्त्री समस्ता सकला जगत्सु' यही भारतीय जीवन-दृष्टि का सार है। इसलिए आवश्यक है कि सबरीमाला जैसे विषयों पर निर्णय लेते समय संविधान की मर्यादा, शास्त्रों की गहराई और समाज की वास्तविकता इन तीनों को ही साथ लेकर चलना आवश्यक है। यही संतुलन भारतीयता की पहचान है और यही इस विमर्श का वास्तविक समाधान भी है। हम उम्मीद करेंगे कि न्यायमूर्ति बी. वी. नागरत्ना भी इसे इसी संदर्भ में अवश्य समझेंगी।

# अररिया की घटना और हमारे सामाजिक मूल्य

**दृष्टिकोण**

**बृजेश प्रसाद**

हाल ही में बिहार के अररिया जिले स्थित फारबिसगंज में हुए एक सब्जी मंडी में घटी घटना ने पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया है। ऐसी घटनाएँ न केवल मानवीय संवेदनाओं को आहत करती हैं, बल्कि हमारे सामाजिक ढाँचे की कमजोरियों को भी उजागर करती हैं। यह अत्यंत चिंताजनक है कि इस प्रकार की घटनाएँ निरंतर सामने आ रही हैं, जिससे समाज में असुरक्षा, भय और अविश्वास का वातावरण बनता जा रहा है।

इन घटनाओं के मूल कारणों पर विचार करना आवश्यक है। सामाजिक असमानता, नैतिक मूल्यों में गिरावट, प्रशासनिक लापरवाही तथा बढ़ती संवेदनहीनता इस समस्या की जड़ में दिखाई दे रही हैं। जब समाज में आर्थिक और सामाजिक विषमताएँ गहराती हैं, तब असंतोष और आक्रोश जन्म लेते हैं, जो कई बार हिंसात्मक रूप धारण कर लेते हैं। इसके साथ ही जब प्रशासन समय पर और प्रभावी हस्तक्षेप नहीं कर पाता, तो अपराधियों के मनोबल में वृद्धि होती है।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक मीडिया विशेषकर फिल्मों और टीवी धारावाहिकों की भूमिका भी विचारणीय है। आजकल कई फिल्मों और धारावाहिकों में हिंसा, मार-काट और अपराध को जिस प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है, वह कहीं न कहीं समाज के एक वर्ग को प्रभावित करता है। बार-बार ऐसे दृश्यों के संपर्क में आने से लोगों के भीतर भय और संवेदनशीलता का क्षय होने लगता है और कुछ मामलों में वे इन कृत्यों को सामान्य मानने लगते हैं। यद्यपि यह कहना पूर्णतः उचित नहीं होगा कि मीडिया ही इन घटनाओं का प्रत्यक्ष कारण है, फिर भी इसके प्रभाव को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

इस घटना के विरोध में समाज के विभिन्न वर्गों सामाजिक संगठनों, बुद्धिजीवियों और आम नागरिकों ने खुलकर अपनी आवाज उठाई है और न्याय की मांग की है। यह सकारात्मक संकेत है कि समाज अब भी अन्याय के विरुद्ध सजग और संवेदनशील है।

वर्तमान परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि हम केवल विरोध तक सीमित न रहें, बल्कि ठोस और दीर्घकालिक समाधान की दिशा में कार्य करें। समाज में नैतिक शिक्षा को पुनः स्थापित करना, युवाओं को सही दिशा देना, मीडिया के प्रति जागरूक दृष्टिकोण विकसित करना तथा कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही प्रशासन को भी अधिक जिम्मेदारी और तत्परता के साथ कार्य करना होगा, ताकि अपराधियों में भय और आम नागरिकों में विश्वास कायम रह सके।

अंततः एक सुरक्षित, संवेदनशील और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण केवल सरकार या प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। सामूहिक प्रयास, जागरूकता और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के माध्यम से ही हम ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोक सकते हैं और एक बेहतर समाज की स्थापना कर सकते हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

**प्रधान संपादक**
उमेश त्रिवेदी

**कार्यकारी प्रधान संपादक**
अजय बोकिल

**संपादक (मध्यप्रदेश)**
विनोद तिवारी

**स्थानीय संपादक**
हेमंत पाल

**प्रबंध संपादक**
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

**'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।**

# दो लोगों के बीच हुआ समझौता- युद्ध में घायल बिचौलिया

**व्यंग्य**

**डॉ. प्रदीप मिश्र**

लेखक व्यंग्यकार हैं।

समझौता मेज़ सज चुकी थी। उस पर बेशकीमती सफेद चादर करीने से बिछ गई थी। मेज़ पर पर रखे गुलदस्ते गमक रहे थे। तमाम एसी मुंह बांधे, बम-बारूद वाले माहौल को शीतल कर रहे थे। मेज़ के दोनों तरफ गद्देदार कुर्सियां बिछाई गई थीं। हर कुर्सी में बैठने वाले के लिए मेज पर माइक का इंतजाम था। ऐसा नहीं कि एक माइक, खींच-खींचकर हरेक बोलने वाले के पास पहुंचाया जाए।

समझौता कक्ष में गद्देदार कालीन बिछी थी, जिस पर चलें तो पैर एक से डेढ़ इंच तक धंस जाएं। कालीन का रंग स्वाभाविक रूप से सुर्ख लाल था। लाइटें, महौल को और भी खुशनुमा बना रही थीं।

समझौता मेज़ पर कांच के चमकदार ग्लास रखे थे। इंपोर्टेड पानी की बोतलें भी थीं। मेज़ पर खाने के लिए बेशकीमती तस्तरी में अरबी ड्राई फ्रूट्स रखे हुए थे। समझौता कक्ष में क्योंकि मच्छर, मक्खी वगैरा नहीं थे, इसलिए मच्छर मार अगरबत्ती नहीं जलाई गई थी।

समझौता करने वाले आ पहुंचे थे। दोनों पक्ष के लोग आमने-सामने बैठे और मेज़ के एक सिरे में बिछी कुर्सियों पर बिचौलिए मतलब मध्यस्थ बैठे। मध्यस्थ बोला, 'वार्ता शुरू की जाए। आपमें से जो पराजित है, पहले बताए कि अब वह क्या चाहता है?' दोनों पक्षों को खामोश देख मध्यस्थ बोला, 'आप में से कोई तो हार रहा होगा? वही बोले कि अब वह क्या चाहता है? हर्जाना भरना चाहता है या गुलाम होना चाहता है। अपना मुल्क बेचना चाहता है या कोई और विकल्प?'

-' देखिए हमने तो सामने वाले को बर्बाद

कर दिया है, इसलिए विजेता तो हम हैं। पहले हमारे बोलने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है।' एक तरफ वाले ने कहा। दूसरी तरफ वाला बोला, 'जभी समझौता-समझौता कहकर, मेज़ पर आकर बैठ गए। हमने तुम्हें घुटनों के बल बिठा दिया है। विजेता तो हम हैं। पहले हम क्यों बोलें?'

-'लड़ाई हुई है तो कोई तो हारा होगा? दोनों पक्ष विजेता कैसे होंगे?' बीच वाले वार्ताकार ने कहा।

- 'देखो मैं तो आल वेदर विजेता हूं। टॉम हॉक मिसाइल चलेगी तो डायरेक्ट क़ब्र जाकर गिरोगे।' एक तरफ वाला चिल्लाया। दूसरी तरफ वाला कमजोर नहीं था। वह भी चिल्लाया, 'मैं क्या कमजोर हूं? ना जाने कितनी टॉम हॉक को मैंने हार्मुज में फेंकें हैं।' बिचौलिया मिमियाया, 'देखिए जनाब! आपका इस तरह का रवैया ही टेंशन की वजह बनता है...।'

- 'वो तो मैं अपने चींचाऊ चचा के कहने से आ गया वरना, लड़ाई हम तुम लोगों से बीस नहीं चालीस हैं।'

- 'अरे जा! पत्थर पीरियड में रहने की तैयारी कर। अंडे की भुर्जी न बनाए तो हमारी पावर भी सुपर नहीं।'

दोनों पक्ष अब कुर्सियों पर नहीं, समझौता मेज़ पर सवार थे। ग्लास, तस्तरी और माइक उनके हाथ में थे। बिचौलिया मिमियाया रहा था, 'जनाब, मुझे क्यों मार रहे हैं? मुझे बख्शिए। माफी हुजूर माफी...।' सुना है दो लोगों के बीच हुए समझौता-युद्ध में घायल बिचौलिया अब पट्टियां बांधे कराह रहा है।

महात्मा फुले जयंती

अमित राय

सामाजिक शोध अध्येता

# समानता आधारित सामाजिक परिवर्तन का दर्शन

**फुले का ध्यान सामाजिक मुक्ति के लिए किसी खास जाति पर नहीं था। वह पूरे हाशिये पर पड़े इंसानों के लिए समानता, स्वतंत्रता और गरिमा के लिए खड़े थे, चाहे वे शूद्र, अतिशूद्र, आदिवासी, किसान, महिलाएं, मजदूर, कुष्ठ रोगी, मछुआरे, चरवाहे, भिखारी या ऐसे ही दूसरे लोग हों। फुले के जीवनी लेखक के शब्दों में, 'यह वे (जोतिराव) ही थे जिन्होंने अछूत वर्गों के बीच से नेताओं का निर्माण किया। वे अछूतों के इलाकों में जाते थे और उनमें से ऊर्जावान और बुद्धिमान लोगों को समाज में सक्रिय होने, कुछ सामाजिक कार्य करने, लिखने और बोलने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनके द्वारा चुने गए ऐसे लोगों में से एक गोपाल बाबा वलंगकर थे।' इसके अलावा, अछूतों, विशेषकर लड़कियों के लाभ के लिए फुले द्वारा की गई शैक्षिक पहल, पूरे उन्नीसवीं सदी के भारतीय बौद्धिक इतिहास में अभूतपूर्व थी।**

महात्मा जोतिराव गोविंदराव फुले (1827-1890) ऐसे पहले विचारक थे जो उन्नीसवीं सदी में बौद्धिक और सामाजिक जीवन में अस्पृश्यता के मुद्दे को सबसे पहले जोरदार तरीके से सामने लाये। उन्होंने समाज में व्याप्त पवित्रता और वर्ण व्यवस्था की धारणा के आधार पर भेदभावपूर्ण सामाजिक विभाजनों की निंदा की और इसे पूरी तरह से ब्राह्मणवादी शरारत और चालाकी का उत्पाद माना और बताया कि इन्होने ही निचले वर्गों अर्थात् शूद्रों और अतिशूद्रों का शोषण करने के लिए कुशलतापूर्वक योजना बनाई।

उन्होंने केवल सामाजिक विभेद की बात नहीं की बल्कि असमान सामाजिक संबंधों के लगभग पूरे दायरे में क्रांतिकारी परिवर्तन की वकालत की और एक नयी मानक व्यवस्था की नींव बनाने के लिए समानता, स्वतंत्रता, मानवतावाद और गरिमा के सिद्धांतों पर जोर दिया। समानता,सामाजिक परिवर्तन के फुले के दर्शन का आधार बनी। अस्पृश्यता के खिलाफ उनकी प्रतिबद्धता केवल उपदेश तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उसे उन्होंने व्यवहारिक कार्यों में भी तब्दील किया,उन्होंने अछूत लड़कियों के लिए स्कूल खोला और अपने सार्वजनिक और निजी जीवन में अस्पृश्यता का खुला विरोध किया,ऐसा उन्होंने इतिहास के उस कालखंड में किया जब ब्राह्मणवादी कट्टरता की पहचान थी और जाति से जुड़े भेदभाव पूर्ण आचरण के लिए बहुत कम सहिष्णुता थी। संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था कठोर जाति प्रतिबंधों द्वारा शासित थी,जिसके उल्लंघन के लिए दंडात्मक प्रावधान थे। किसी व्यक्ति की स्थिति उसकी जाति पर निर्भर करती थी और यह उसके जीवन में उसकी योग्यता या उपलब्धियों से परे अपरिवर्तनीय थी। इस सामाजिक मैट्रिक्स को चुनौती देना बेहद मुश्किल हो सकता था; इसके लिए बहुत बड़ी कुर्बानियाँ देनी पड़ीं और उन्होंने अपने आजीवन मिशन को हासिल करने के लिए पूरा जीवन समर्पित किया। फुले भारतीय इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ब्राह्मणवाद की विचारधारा (पौराणिक कथाओं और उस पर आधारित संपूर्ण सामाजिक संरचना की पवित्रता) को जड़ से खारिज कर दिया।

महत्वपूर्ण यह है कि फुले का ध्यान सामाजिक मुक्ति के लिए किसी खास जाति पर नहीं था। वह पूरे हाशिये पर पड़े इंसानों के लिए समानता, स्वतंत्रता और गरिमा के लिए खड़े थे, चाहे वे शूद्र, अतिशूद्र, आदिवासी, किसान, महिलाएं, मजदूर, कुष्ठ रोगी, मछुआरे, चरवाहे, भिखारी या ऐसे ही दूसरे लोग हों।

फुले के जीवनी लेखक के शब्दों में, 'यह वे (जोतिराव) ही थे जिन्होंने अछूत वर्गों के बीच से नेताओं का निर्माण किया। वे अछूतों के इलाकों में जाते थे और उनमें से ऊर्जावान और बुद्धिमान लोगों को समाज में सक्रिय होने, कुछ सामाजिक कार्य करने, लिखने और बोलने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनके द्वारा चुने गए ऐसे लोगों में से एक गोपाल बाबा वलंगकर थे।' इसके अलावा, अछूतों, विशेषकर लड़कियों के लाभ के लिए फुले द्वारा की गई शैक्षिक पहल, पूरे उन्नीसवीं सदी के भारतीय बौद्धिक इतिहास में अभूतपूर्व थी।

फुले के विचार,उन्नीसवीं सदी के महाराष्ट्र में मुख्यधारा के सामाजिक सुधार आंदोलन से एक क्रांतिकारी प्रस्थान का प्रतिनिधित्व करते थे। बौद्धिक रूप से वे गैर-ब्राह्मणवादी मध्ययुगीन संत-कवियों, विशेष रूप से कबीर की तर्ज पर एक कट्टरपंथी गैर-अनुरूपतावादी विश्वदृष्टि से संबंधित थे, जिसे उन्होंने अपने स्वयं के निरंतर विकसित होने वाले विश्वव्यापीकरण और अति-आधुनिकतावाद द्वारा और समृद्ध किया। उनका जीवन और समाज का दर्शन इतना व्यापक था कि इसमें जाति, समुदाय, क्षेत्र या धर्म के बावजूद समाज के लगभग हर उत्पीड़ित और दमित वर्ग को शामिल किया जा सकता था। वे राष्ट्रीयता की सीमाओं को भी पार करने के लिए प्रवृत्त हुए और अंतर्राष्ट्रीयता की वकालत करने में रवींद्रनाथ टैगोर के सही अग्रदूत होने का दावा कर सकते हैं,जो फुले की अवधारणा में विशेष रूप से उनकी गहरी आध्यात्मिकता में निहित था। फुले के विचार उनकी तीन प्रमुख रचनाओं में समाहित हैं - गुलामगिरी (दासता) 1873 में प्रकाशित, शेतकरीचा आसुद (कृषक का चाबुक) 1883 में लिखी गई लेकिन बाद में प्रकाशित हुई और सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक (सत्य के सार्वभौमिक धर्म पर पुस्तक) 1889 में लिखी गई लेकिन मरणोपरांत 1891 में प्रकाशित हुई। उन्होंने कई अभंग (कविताएं) भी लिखे और विविध प्रकार की अन्य रचनाएँ भी लिखीं। इन सभी रचनाओं के साथ-साथ उनके रोजमर्रा के जीवन में, अस्पृश्यता के खिलाफ उनकी प्रतिबद्धता उसके खिलाफ स्पष्ट जुनून बने रहे,जो आधुनिक भारतीय इतिहास में किसी भी एक व्यक्तिगत प्रयास में पहले कभी नहीं देखे गए। गुलामगिरी समानता के लिए, सामाजिक परिवर्तन के लिए फुले के दर्शन का एक उग्र घोषणापत्र था, इसने सामाजिक समानता और सम्मान की मांग की, विशेष रूप से शूद्रों और अतिशूद्रों को ब्राह्मणवादी कट्टरता, वर्चस्व और भेदभाव की गुलामी से मुक्ति दिलाने की मांग की।

फुले का सार्वजनिक जीवन में आने का मकसद ही शूद्रातिशूद्रों के हक में था। 1882 में शिक्षा आयोग को सौंपे गए अपने ज्ञापन में उन्होंने अछूत समुदाय की लड़कियों की शिक्षा के लिए की गई अपनी गतिविधियों की एक झलक दी। उनके अपने शब्दों में, 'महिला विद्यालय की स्थापना के एक साल बाद मैंने निम्न वर्गों, खास तौर पर महार और मांग के लिए एक स्वदेशी मिश्रित विद्यालय भी स्थापित किया। बाद में इन वर्गों के लिए दो और विद्यालय जोड़े गए... मैं उनमें करीब नौ से दस साल तक काम करता रहा '। उनकी

पत्नी सावित्रीबाई फुले, जिन्होंने उनके सुधारवादी प्रयासों में उनका साथ दिया, को कई बार इन स्कूलों में जाते समय ऊंची जाति के गुंडों द्वारा फेंकी गई ईंटों का सामना करना पड़ा। दंपत्ति को उनके पैतृक घर से बेदखल भी होना पड़ा, क्योंकि उन्होंने जो कहा, वह करने का साहस किया, अशिक्षित निचले तबके को शिक्षित किया और इस तरह ब्राह्मणवादी पदानुक्रम के खोखलेपन और उसके भेदभावपूर्ण नुस्खों की दमनकारी प्रकृति को उजागर किया। दबे-कुचले और वंचित लोगों, खास तौर पर शूद्रों और अति-शूद्रों के उत्थान के लिए अपने काम को अंजाम देने के लिए उन्होंने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। समानता के लिए संघर्ष करना फुले की आस्था का एक स्थायी विषय रहा। अपनी पुस्तक गुलामगिरी की प्रस्तावना में ही उन्होंने अपने उद्देश्य और प्रयासों का संदर्भ प्रस्तुत किया।

उन्होंने लिखा कि 'सैकड़ों सालों से शूद्र और अतिशूद्र ब्राह्मणों के शासन के तले अनगिनत मुसीबतों का सामना कर रहे हैं और दयनीय हालत में जी रहे हैं... इस किताब का एकमात्र मकसद इन सभी सताए हुए लोगों का ध्यान उनकी अपनी हालत की ओर दिलाना है और उन्हें अपनी स्थिति पर ठीक से सोचने के लिए मजबूर करना है ताकि वे खुद को ब्राह्मणों की गुलामी, उनके अत्याचार और अन्याय से आज़ाद कर सकें '।

उन्होंने शूद्रों और अतिशूद्रों को 'रक्त-भाई' माना, अर्थात् एक ही सामाजिक वंश से संबंधित लोग, इस प्रकार उनके और उनके बीच का अंतर पूरी तरह से धुंधला हो गया। 'हमारे पूर्वज और तथाकथित अछूतों (महार और मांग, आदि) के पूर्वज आपस में सगे भाई थे... उनके अपने सगे-संबंधी थे। शूद्रों को मूल रूप से स्वदेशी क्षत्रिय माना जाता था जिन्हें आक्रमणकारी आर्यों ने हराया और गुलाम बनाया। उन पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए, भाटों (आर्यन ब्राह्मणों) ने जाति व्यवस्था की घातक कल्पना का आविष्कार करके उनके बीच फूट पैदा की। उन्होंने जनता के भोले-भाले दिमागों को गुमराह करने के लिए झूठे शास्त्रों की रचना की। कुछ शूद्र जिन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा में इस अन्याय के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी, उन्हें कठोर अपमान और निंदा का सामना करना पड़ा। उन्हें उनके मूल शूद्र रैंक से 'एक अलग श्रेणी में अलग कर दिया गया' और अछूत के रूप में कलंकित किया गया। इस तरह उन्हें 'रोजी-रोटी के साधनों से वंचित' कर दिया गया और वे गरीबी और दुःख में जीने लगे और उन्हें 'मरे हुए जानवरों का मांस खाने की हद तक' मजबूर होना पड़ा।

उन्होंने पाया कि उनकी हालत नीग्रो गुलामों से भी बदतर थी। 'ये (धूर्त) ब्राह्मण... हमारी भोली-भाली अंग्रेजी सरकार की आंखों में धूल झोंक रहे हैं और भारत में शूद्रों और अतिशूद्रों पर अमेरिकी गुलाम मालिकों द्वारा अपने नीग्रो गुलामों के साथ किए गए व्यवहार से भी अधिक क्रूरता से अत्याचार कर रहे हैं। '

फुले की अगली मौलिक रचना शेतकर्याचा आसुड लगभग पूरी तरह से ब्राह्मणवादी शोषण और उच्च औपनिवेशिक कराधान के दोहरे बोझ तले दबे किसानों की समस्याओं को समर्पित है। यहाँ भी, शूद्रों और अतिशूद्रों दोनों के लिए उनकी समान भावना और उनकी दयनीय दुर्दशा से बाहर निकलने का उनका प्रयास उनकी बौद्धिक चिंता का केंद्र बिंदु बना। उनके विचार में,शूद्र और अतिशूद्र जो खेती करने वाली आबादी का बड़ा हिस्सा थे,ब्राह्मणवादी और औपनिवेशिक शोषण के सबसे बुरे शिकार थे।

दरअसल फुले का सामाजिक परिवर्तन का दर्शन मूलतः उनके गहन मानवतावाद और ईश्वरीय न्याय में दृढ़ विश्वास के साथ तीव्र आध्यात्मिकता से निकला था। उनके अनुसार, हम सभी एक निर्माता, 'सर्वशक्तिमान', 'सर्वव्यापी', 'निराकार परमात्मा', 'हम सभी के सार्वभौमिक निर्माता और सार्वभौमिक पिता सर्वशक्तिमान ईश्वर' की संतान हैं। 'केवल एक ही प्रामाणिक निर्माता है और सभी मनुष्य एक हैं। संप्रभु सत्य उसका प्रतीक है। उसने सभी मानवजाति का निर्माण किया है। सभी मनुष्य उसके बच्चे हैं जिनकी वह (प्यार से) रक्षा करता है।' ईश्वरीय न्याय के मूल सिद्धांत के रूप में अंतर्निहित समानता का यह विचार पूरे विश्व की व्यवस्था में लागू होना चाहिए। इसमें ऊंच नीच और भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं है। धर्मशास्त्र में जिस तरह आस्तिक और नास्तिक शब्द का प्रयोग होता है, उस तरह डेईस्ट का प्रयोग नहीं होता। डेईस्ट एक ऐसा विचार था, जिसमें ईश्वर के अस्तित्व और ईश्वर के द्वारा की गई सृष्टि-निर्माण की प्रक्रिया की ओर देखने की एक स्वतंत्र दृष्टि थी, इसलिए डेईस्ट ईश्वर के अस्तित्व पर पक्का विश्वास रखने वाले होने के कारण उन्हें आस्तिक तो कहा जा सकता है, परंतु उनके द्वारा किसी विशिष्ट धर्म की परंपरा और कर्मकांड स्वीकार न किए जाने के कारण वे अन्य आस्तिकों से कुछ भिन्न थे। सभी आस्तिकवादी लोग ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं। इसके बावजूद ज़रूरी नहीं कि वे किसी विशेष धर्म की परंपरा और कर्मकांड पर भी विश्वास रखें, जो ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखते हैं, परंतु किसी भी धर्म के कर्मकांड पर विश्वास नहीं रखते, उन्हें डेईस्ट कहा जाता है। एक तरह से डेईस्ट धर्मनिरपेक्ष और शुद्ध आस्तिकतावादी थे। आज भी दुनिया में ऐसे काफ़ी लोग हैं, जिनमें अनेक वैज्ञानिक, विचारक, लेखक और साधारण लोग भी सम्मिलित हैं। इस विचार को माननेवालों में एक प्रमुख विचारक थे थॉमस पेन, जो डेईस्ट थे। फुले के विचारों पर थॉमस पेन का प्रभाव बहुचर्चित है, थॉमस पेन की किताब 'राइट ऑफ़ मैन' पढ़कर वे अभिभूत हुए और उसकी बारीकियों को भारतीय सन्दर्भों में उन्होंने कहा कि ब्राह्मण लोगों ने थॉमस पेन की पुस्तक का आधार लेकर इस बात के लिए सबको तैयार किया कि हम सब लोग एक हुए बिना अमेरिकन, फ्रेंच और रूसी लोगों की बराबरी नहीं कर सकते। 'मेरे बचपन में मैं भी इस तरह का पागलपन करता था, परंतु जब मैंने कुछ वर्षों बाद उसी पुस्तक का बारीक़ी से अध्ययन किया तब इन सुधरे हुए भटों की मतलबी चालों का वास्तविक अर्थ मुझे पता चला।' भट-ब्राह्मण सोचते थे कि ब्रिटिशों को इस देश से हटा कर और अपना शासन हासिल करके शूद्रातिशूद्रों को हमेशा के लिए गुलाम बनाकर कैसे रखा जाए !

फुले का ब्रिटिश शासन के प्रति झुकाव अंधा नहीं था; वास्तव में,उनका दृष्टिकोण काफी आलोचनात्मक और योग्य था। जहाँ भी उन्हें ब्रिटिश सरकार में खामियाँ या कमियाँ नज़र आई, उन्होंने खुलकर उसकी आलोचना की, यहाँ तक कि उन्हें भागने पर मजबूर करके उन्हें निष्कासित करने की इच्छा भी की। उन्होंने उसी औपनिवेशिक शासन के तहत किसानों की दयनीय दुर्दशा को निर्दयतापूर्वक उजागर किया और लगभग उन्नीसवीं सदी के भारतीय उदारवादी राष्ट्रवादियों की तर्ज पर उच्च करों और दुर्बल औद्योगिकीकरण के दोहरे बोझ के नीचे दबे किसानों की बिगड़ती स्थिति के लिए इसे ज़िम्मेदार ठहराया।

महात्मा फुले जयंती

अभिषेक झरबडे

# शिक्षा की शक्ति से समाज को बदलने वाले नायक

**फुले की शुरुआती पढ़ाई पणोजी के एक स्कूल में हुई, लेकिन जातिगत कट्टरपंथ के कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। यहीं से उन्होंने भेदभाव, छुआछूत और ऊंच-नीच का कड़वा अनुभव महसूस किया। यही वह समय था जब उनके भीतर जातिवाद के खिलाफ विद्रोह की भावना ने जन्म लिया। कूल से निकाले जाने के बाद भी ज्योतिबा ने हिम्मत नहीं हारी। वे दिन में खेतों में काम करते और रात में खुद से पढ़ाई करते रहे। उनकी लगन को देखते हुए 1841 में उनके पड़ोसी गफ्फार बेग और लेजिट ने उनकी मदद की, जिससे उन्हें एक मिशनरी स्कूल में दाखिला मिल पाया और वे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सके।**

'विद्या बिना मति गई, मति बिना नीति गई,
नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया,
वित्त बिना शूद्र खचले, इतना सब
अनर्थ एक अविद्या ने किया।'

यह पंक्तियाँ शिक्षा के अपरिहार्य महत्व को रेखांकित करती हैं–जहाँ शिक्षा के अभाव में व्यक्ति का विवेक, नैतिकता, प्रगति और आर्थिक आधार, सब कुछ नष्ट हो जाता है। ये कालजयी विचार महान समाज-सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले के हैं, जिन्होंने अपने जीवन भर के संघर्षों से समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध एक वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया। आज, 11 अप्रैल को उनकी जयंती के अवसर पर, हम न केवल उनके जीवन, विचारों और कार्यों का स्मरण करेंगे, बल्कि यह विश्लेषण भी करेंगे कि क्या उनके सपनों का भारत आज यथार्थ के धरातल पर आकार ले पाया है?

ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को महाराष्ट्र में हुआ था। उनका परिवार माली समाज से था, जिनका पारंपरिक कार्य बागवानी था। उस समय समाज में माली जाति को निचली नज़र से देखा जाता था। बचपन में ही माँ का साया उठ जाने के कारण उनके पिता ने ही उन्हें पाला-पोसा।

फुले की शुरुआती पढ़ाई पणोजी के एक स्कूल में हुई, लेकिन जातिगत कट्टरपंथ के कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। यहीं से उन्होंने भेदभाव, छुआछूत और ऊंच-नीच का कड़वा अनुभव महसूस किया। यही वह समय था जब उनके भीतर जातिवाद के खिलाफ विद्रोह की भावना ने जन्म लिया।

स्कूल से निकाले जाने के बाद भी ज्योतिबा ने हिम्मत नहीं हारी। वे दिन में खेतों में काम करते और रात में खुद से पढ़ाई करते रहे। उनकी लगन को देखते हुए 1841 में उनके पड़ोसी गफ्फार बेग और लेजिट ने उनकी मदद की, जिससे उन्हें एक मिशनरी स्कूल में दाखिला मिल पाया और वे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सके।

एक बार ज्योतिराव फुले अपने एक ब्राह्मण मित्र की बारात में शामिल होने गए, लेकिन सिर्फ अपनी जाति (माली) के कारण उन्हें अपमानित कर बारात से निकाल दिया गया। इस घटना ने उनके मन पर गहरा आघात किया। उन्होंने उसी क्षण ठान लिया कि समाज में फैली इन कुरीतियों और छुआछूत को जड़ से खत्म करने के लिए खुद को शिक्षित करना बेहद ज़रूरी है।इसके बाद, फुले ने गहराई से अध्ययन शुरू किया। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ कबीर, रामानंद और थॉमस पेन जैसे विचारकों को पढ़ा। इन महान लोगों के विचारों ने फुले के जीवन और उनके संघर्ष को एक नई दिशा दी।

महात्मा ज्योतिबा फुले का विवाह कम उम्र में ही सावित्रीबाई से हो गया था। उन्होंने अपनी पत्नी को शिक्षित किया और वर्ष 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए भारत का पहला स्कूल खोला, जहाँ सावित्रीबाई फुले देश की प्रथम महिला शिक्षिका बनीं। उस दौर में यह एक क्रांतिकारी कदम था। शिक्षा के प्रति उनके इस समर्पण का समाज में कड़ा विरोध हुआ, यहाँ तक कि सावित्रीबाई पर रास्ते में गोबर और पत्थर भी फेंके गए, लेकिन वे अपने पथ से तनिक भी विचलित नहीं हुईं।

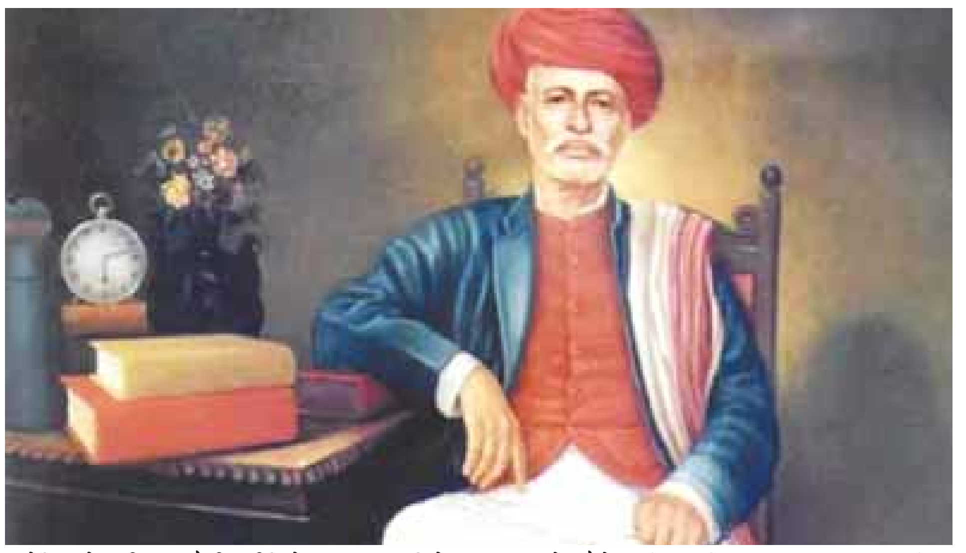

ज्योतिबा ने सती प्रथा जैसी कुरीतियों का खुलकर विरोध किया और विधवाओं की दयनीय स्थिति को देखकर उनके पुनर्विवाह तथा शिक्षा के लिए विशेष प्रयास किए। समाज सेवा के अपने कार्यों में उन्होंने कभी जाति-पाति के बंधनों को आड़े नहीं आने दिया; वे जाति-भेद से ऊपर उठकर हर पीड़ित व्यक्ति की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

फुले ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों–जैसे महिला शिक्षा का अभाव, जातिगत भेदभाव, कर्मकांड और बाल विवाह–के विरुद्ध एक बड़ा आंदोलन खड़ा किया। समाज सुधार की दिशा में अपने इन प्रयासों को वैचारिक धरातल देने के लिए उन्होंने 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की, जो आगे चलकर सामाजिक न्याय और समानता की आवाज बना।'

आज हम ज्योतिबा फुले की जयंती पर उन्हें याद कर रहे हैं। पर सवाल यह है कि क्या सिर्फ याद करना ही काफी है? जवाब है–नहीं। हमें यह समझने की जरूरत है कि क्या फुले के सपनों का भारत बन पाया है?आंशिक रूप से इसे हाँ कहा जा सकता है, क्योंकि हमारे संविधान ने कानूनी स्तर पर दलितों, पिछड़ों और महिलाओं को समानता का व्यापक अधिकार दिया है। लेकिन, चुनौती यह है कि क्या इसका जमीनी स्तर पर सही मायने में क्रियान्वयन हुआ है?

आज भी भारत में शिक्षा और सामाजिक समानता के क्षेत्र में कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिलते हैं, जैसे शिक्षा का अधिकार कानून और बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएँ। सरकारी आंकड़ों के अनुसार साक्षरता दर में वृद्धि हुई है और स्कूलों में लड़कियों की भागीदारी भी बढ़ी है। फिर भी, जमीनी सच्चाई यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी जातिगत भेदभाव, स्कूल ड्रॉपआउट और लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ मौजूद हैं। कई जगहों पर दलितों के साथ भेदभाव की खबरें सामने आती हैं, जो यह बताती हैं कि फुले के सपनों का भारत अभी अधूरा है। ऐसे में आवश्यकता है कि हम केवल उन्हें याद न करें, बल्कि उनके विचारों को अपने जीवन में उतारें। शिक्षा को केवल डिग्री नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाएं। जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति तक समान अवसर और सम्मान नहीं पहुँचेगा, तब तक फुले की जयंती का उद्देश्य अधूरा ही रहेगा।

पुस्तक समीक्षा

मोहन वर्मा

समीक्षक

# किसी छूटे हुए दिन में

'किसी छूटे हुए दिन में' युवा कवि अमेय कांत का दूसरा कविता संग्रह है, जिसमें उनकी 75 कविताएँ संकलित हैं। इससे पहले कवि का पहला संग्रह, 'समुद्र से लौटेंगे रेत के घर', 2016 में प्रकाशित हुआ था, और जिसे पुनर्नवा पुरस्कार और दिनकर सोनवलकर स्मृति दिनकर सृजन सम्मान भी मिला था। यह कृति अपने नाम की तरह ही स्मृतियों, अधूरे पलों और बीते हुए समय की गूंज को समेटे हुए है। लेखक ने बेहद सरल, लेकिन गहरी भाषा में उन एहसासों को व्यक्त किया है, जिन्हें हम अक्सर महसूस तो करते हैं, लेकिन शब्दों में नहीं कह पाते।

युवा अमेय कांत की दृष्टि एक परिपक्व कवि की दृष्टि है, जो वस्तु, घटना, शहर, मौसम, युद्ध और आम जन के भीतर-बाहर को एक्सरे जैसी दृष्टि से देखते हुए एक ऐसा अनदेखा, अनसोचा दृश्य अपनी कविताओं में लाते हैं, जो कवि की संवेदनशीलता के साथ हालात पर सवाल भी खड़े करती हैं और पाठक को एक बार सोचने पर मजबूर भी करती हैं। संकलन की कविताओं को पढ़ते हुए, पाठक कई बार उन छोटी-बड़ी बातों से रूबरू होता है, जो भागते-दौड़ते, या यांत्रिक ज़िंदगी जीते आदमी की सोच से बाहर ही रह जाती हैं, और यही अमेय की कविताओं की विशेषता है।

बात कविताओं की करें, तो पहली कविता, 'चंद्रबिंदु', ही गुम होती चीजों के बारे में है, जैसे हिंदी से गायब होता चंद्रबिंदु। आज अखबारों में, पत्रपत्रिकाओं में जिस तरह प्रूफ की गलतियों की भरमार दिखती है, ऐसे समय में चंद्रबिंदु को कविता का विषय बनाकर, कवि कहता है, अब इसके बिना भी चलने लगा है काम, जैसे घर में धीरे-धीरे बुझता जा रहा हो कोई उम्रदराज़ शख़्स। विज्ञापनों से सजे अखबारों के पन्नों में अब कोई गुंजाइश नहीं रह गई कि ठहर कर सोचा जाए इसके या इस जैसी और

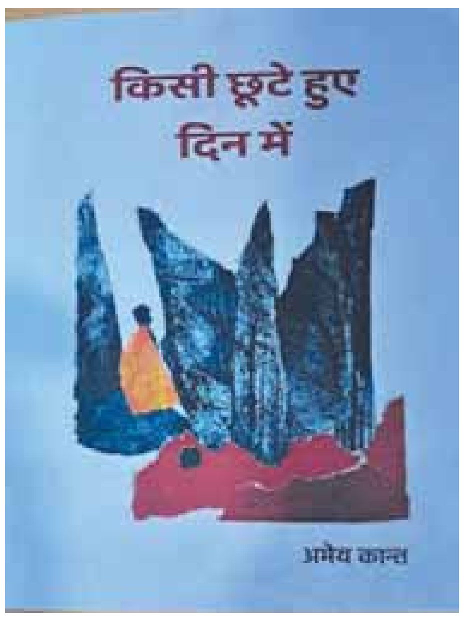


चीज़ों के बारे में। वर्णमाला में सिमटकर रहे दूसरे अक्षरों की तरह हो जाएगा दरकिनार यह भी एक दिन, भाषा से पूरी तरह गायब, जैसे छतों से गायब हो रही गौरैया,जैसे आदमी में से खुद गुम होता जा रहा है आदमी।

छोटे-छोटे बच्चों के पास पड़ोस के घरों में आवाजाही को लेकर रची कविता, 'दूसरा घर', एक बढ़िया कविता है, जिसमें कवि कहता है, बचपन इसी तरह दर्ज होता रहा, खुशबू की तरह कई घरों की स्मृतियों में। संकलन की एक और कविता प्रभावित करती है, 'मंगल वाद्य', जिसमें शहनाई बजाने वाले तीन लोगों की निजी जिंदगी के दुख-दर्द को शब्दों में पिरोकर एक मार्मिक कविता रची गई है। अपने-अपने दुखों को बिछाकर, वे तीनों बैठ गए मंडप के पास और मंगल वाद्य बजा रहे हैं। दो औरतें कविता में अपनी ही धुन में, दुनिया जहान से बेख़बर चलती, दो औरतों के बहाने कवि कहता है, कभी लगता है कि वे सच में चल रही हैं, और कभी जैसे वहीं ठहरी हुई हैं, समय के अनगिनत पन्नों पर एक पंक्ति की तरह दोहराई जाती हुई।

शहर पर केंद्रित सात कविताओं में, कस्बे से शहर में तब्दील होते शहर को एक नई दृष्टि से कविताओं में उकेरा गया है। संकलन की विशेष उल्लेखनीय कविता, 'इस समय जब', में अपनी बेटी के बहाने इस कठिन समय में बेटियों की व्यथा कथा को बहुत मार्मिक और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। कोरोना पर केंद्रित 'कड़वे दिन ', 'कटा हुआ पेड़ ', के अलावा, युद्ध और दंगों पर भी कविताएँ हैं, जैसे कि Life is Beautiful ', 'युद्ध में स्त्रियां ', 'चीथड़े ', 'अधखुली खिड़की' ये सभी संग्रह की अनूठी कविताएँ हैं ही,महक, प्रार्थना, बहुत चलने वाली चप्पलें, अकेला आदमी, चीजों का पता, बड़ी बात,स्पर्श भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बहरहाल अमेय कांत का यह दूसरा कविता संग्रह भी पठनीय और संग्रहणीय है। लेखन शैली सहज और प्रवाहपूर्ण है, जिसमें कहीं भी बनावट या कृत्रिमता नहीं दिखती। हर पंक्ति में एक आत्मीयता है, जो पाठक को अंत तक बांधे रखती है।

# संकट मोचन के दरबार में अनूप जलोटा ने लगायी 27वीं हाजिरी

राजेन्द्र शर्मा
(लेखक कवि और कलाविज्ञ तथा पूर्व शासकीय अधिकारी हैं)

एकसौतीन वें संकट मोचन संगीत समारोह की चौथी निवासी। दिन बृहस्पतिवार लेकिन मंदिर परिसर में शाम से ही मंगलवार जैसी भीड़। तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार भजन सम्राट अनूप जलोटा की प्रस्तुति चौथे नंबर पर। यानि सबको पता है कि रात्रि 12 बजे के बाद ही अनूप जलोटा की प्रस्तुति होगी, लेकिन श्रोता शाम 7 बजे से परिसर में आकर अपना सुविधाजनक स्थापन सुरक्षित करना चाहते हैं। श्रोताओं की भीड़ से खचाखच भरे प्रांगण में अपने प्रिय भजन गायक को सुनने की बैचेनी।

रात्रि 12 बजे के बाद अनूप जलोटा अपने साजिन्दों के साथ मंच पर अवतरित हुए तो श्रोताओं ने हर हर महादेव के उद्घोष से उनका अभिवादन किया। ठसाठस भरे परिसर में अनूप जलोटा ने अपने चिर-परिचित अंदाज में 'ऐसी लागी लगन'...पर आलाप लगाया तो श्रोता झूम उठे। इसके बाद मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे, कौन कहता है कि भगवान आते नहीं, अच्युौतम केशवम दामोदरम, दुनिया चले न राम के बिना, इतनी शक्दिरम हमें देना दाता, नाम जप ले हरि का बंदे फिर पीछे पछतायेगा, हरी बोल हरी बोल गाते हुए श्रोताओं को नाचने के लिए बाध्य कर दिया। अनूप जलोटा की आवाज के साथ श्रोता मानो संगत कर उनका साथ दे रहे थे।

अपनी प्रस्तुति से आह्लादित भजन सम्राट अनूप जलोटा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि संकट मोचन के दरबार में बिना नामा 27 साल से हाजिरी लगा रहा हूं। संकट मोचन बाबा की मुझ पर इससे बड़ी कृपा और क्या हो सकती है। इस दरबार में शास्त्रीय संगीत के देवतुल्यम कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे हैं। इस दृष्टि से देखता हूं तो भले ही मैं 27 सालों से संकट मोचन के दरबार में अपनी हाजिरी लगा रहा हूं, परन्तु इस मंच के लायक मैं बिल्कुल नहीं हूं, बस मुझ पर हनुमान जी की कृपा है, वह बुलाते हैं और मैं चला आता हूं।

भजन सम्राट यहीं नहीं रुके। उन्होंने कहा कि संकट मोचन संगीत समारोह शास्त्रीय संगीत के कलाकारों के लिए इतना बड़ा और पवित्र मंच है कि नया वर्ष आने पर सबसे पहले हनुमान जयन्ती पर होने वाले इस समारोह का ध्यान दिलोदिमाग में आता है। कलाकार हो या श्रोता, किसी की हैसियत नहीं कि वह कह सके कि वह संकट मोचन संगीत समारोह में जायेगा ही, यहां वो ही आ पाता है, जिसे संकट मोचन बाबा बुलाते हैं।

16 साल की उम्र से भजन गा रहे अनूप जलोटा अपने भजनों के लिए संपूर्ण विश्व में जाने जाते हैं और वर्ष भर दुनिया भर में भजन गायन का कार्यक्रम करते हैं। अनूप इसका श्रेय भी संकट मोचन को देते हुए कहते हैं कि मैं रोजाना छह-सात घंटे रियाज करता हूं। मेरा मानना है कि हल्की आवाज में रियाज करना चाहिए, इससे गला थकता नहीं है और आवाज पालिश होती रहती है। यहां संकट मोचन बाबा के दरबार में अपनी हाजिरी लगाकर यह सब साल भर कर आराम से कर सकूं, इसके लिए मानसिक स्तर पर साल भर के लिए हाजिरी लगाकर अपनी बैटरी को चार्ज कर लेता हूं।

## इंदिरा वार्ड निवासी से एक लाख बीस हजार 6 रुपये की धोखाधड़ी, पुलिस ने किया मामला दर्ज

**सोहागपुर।** जरा सी चूक से आजकल धोखाधड़ी की वारदातें देश भर में आम बात हो गई हैं। इसलिए समय समय सरकार नागरिकों को आगाह करते रहती हैं।कि कोई भी ओटीपी या अन्य संदिग्ध परिस्थितियों से बचें। सतर्कता बरतें। फिर आम आदमी निरंतर धोखाधड़ी का शिकार होते रहते हैं। ऐसा ही वाकिया आज सोहागपुर पुलिस ने दर्ज किया है। इस संबंध में पुलिस ने बताया कि सोहागपुर इंदिरा वार्ड निवासी फरियादी शेख शादाब पिता शेख युसूफ ने इस आशय की प्राथमिकी अज्ञात आरोपी के खिलाफ दर्ज कराई है। कि वह कार इंश्योरेंस का काम करता है। दिनांक 31.3.26 को मधुर कोरियर सोहागपुर से एक बंद लिफाफा गाड़ी का एग्रीमेंट के दस्तावेज वास्तु फाइनेंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को भेजा था। जो दिनांक 6.4.26 तक कोरियर वास्तु फाइनेंस कंपनी इंदौर नहीं पहुंचा। तब वास्तु कंपनी के कर्मचारी को फोन कर बताया कि तुम्हारे द्वारा भेजा गया पार्सल अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है ।आर्डर ट्रैक करने के लिए गूगल पर मधुर कोरियर कंपनी के नंबर को सर्च किया ।गूगल पर नंबर दिखा

जिसे कॉल किया ।कॉल पर कहा गया डाक बांटने वाले का नंबर दे रहा हूं। उसमें 2 भेज दो ।उस व्यक्ति को 2 ट्रांसफर किए ।कुछ देर बाद खाते से क्रमशः रुपए निकलते रहे । ऐसे में लगभग 1 लाख 20 बीस हजार,6 रुपए कट गए। बाद में फरियादी को ऐसा लगा कि उसके साथ साइबर फ्रॉड धोखाधड़ी हो गई हैद्य फरियादी ने साइबर हेल्पलाइन 1930 पर भी शिकायत दर्ज कराई है। रिपोर्ट के आधार पर अज्ञात आरोपी के विरुद्ध धारा 318(4)319(2) बीएनएस धोखाधड़ी करने का मामला दर्ज करके विवेचना में लिया गया है। नगर निरीक्षक राहुल रायकवार एवं एएसआई गणेश राय ने नागरिकों को आगाह किया है कि पुलिस के द्वारा समय-समय पर साइबर फ्रॉड से बचने के लिए प्रचार प्रसार किया जाता है। गूगल पर कोई भी सर्च किया गया नंबर अथवा विज्ञापन आदि की सत्यता को पहले परख लें । उसके बाद ही पैसों का आदान-प्रदान करें । सावधान रहें, सुरक्षित रहें।

## सहयोग एवं सुरक्षा को मजबूत करके पुलिस की मदद करें : नगर निरीक्षक

**सोहागपुर।** नवीन थाना परिसर में नगर निरीक्षक राहुल रायकवार, उप निरीक्षक एस .एस. अली, मुकेश सोनी, एएसआई गणेश राय आदि के सानिध्य में थाना सोहागपुर स्तर पर ग्राम रक्षा समितिकी बैठक संपन्न हुई। इसके पूर्व नगर रक्षा समिति का गठन किया गया। इसी संदर्भ में नवीन थाना

परिसर में बैठक आयोजित की गई। नगर एवं ग्राम रक्षा समिति के सदस्यों को नगर निरीक्षक राहुल रायकवार के कहा कि आप सभी अपने कार्य के अतिरिक्त पुलिस की मदद कर रहे हैं। आपको साधुवाद। श्री रायकवार ने बैठक को संबोधित करते कहा कि

समिति सदस्य नगर सुरक्षा को मजबूत करके पुलिस की मदद करें ।जिससे अपराधों पर अंकुश लगकर सांप्रदायिक सौहार्द संपत्ति की सुरक्षा हो सके। समिति सदस्य संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखे मुख्य कार्य सुरक्षा, गस्त, पुलिस की सहायता, अपराध नियंत्रण, शांति व्यवस्था एवं आपदा प्रबंधन है । आपने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि समय-समय पर थाना क्षेत्र में होने वाले त्यौहारों पर्वो पर सहयोग लिया जाएगा समिति सदस्यों ने में उत्साह बैठक उपस्थिति दर्ज कराई। बैठक में मकसूद खान, आरक्षक मनोहर दायमा सहित नगर सुरक्षा समिति के सदस्य उपस्थित थे ।

## कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन का प्रशिक्षण

**सोहागपुर।** पुलिस एवं स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आपातकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए दुर्घटना आदि की स्थिति में जीवन रक्षा के तौर पर दी जाने वाली सीपीआर (कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन)का प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोहागपुर में प्रदान किया गया। इस अवसर पर डाक्टर अरूण यादव एवं डॉ नेहा वर्मा ने उपस्थित जनों को आकस्मिक उपचार की महत्वपूर्ण बातों को साझा करते बताया कि जब किसी व्यक्ति का दिल धड़कना बंद कर दे या सांस रुक जाए । जिससे ऑक्सीजन का संचार हो सके इस हेतु आमजनों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर सीपीआर का प्रशिक्षण पुलिस विभाग, स्वास्थ्य विभाग के सहयोग के साथ आयोजित करता है ।इसी तारतम्य में सीपीआर का कार्यक्रम थाना क्षेत्र के दो स्थानों पर आयोजित किया गया जिसमें डाक्टरों मरीज़ को किस तरह से प्रारंभिक तोर पर चिकित्सालय पहुंचने तक जीवन रक्षक प्रणाली बताई। जिसमें एक मिनट में सौ बार कमर को सीधा करके हाथों से मरीज़ की छाती को दबाना पड़ता है वहीं मरीज की पल्स भी चेक करें। इस अवसर पर पुलिस अधिकारी भी उपस्थित थे।

# पी.एम. मित्र पार्क एवं पीथमपुर की विख्यात छवि के कारण उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा मध्यप्रदेश से निवेश आकर्षण एवं अन्य चीजों को समझने हेतु दल भेजा

### 56000 एकड़ में विकसित हो रहे बुंदेलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अधिकारियों द्वारा मध्यप्रदेश का दौरा किया

**धार।** अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं रीजनल स्तर पर रोड़ शो एवं ग्लोबल तथा रीजनल इंडस्ट्री कॉनक्लेव के माध्यम से प्रदेश में निवेश आकर्षित करने के मध्यप्रदेश मॉडल की देश भर में सराहना हो रही है। 56000 एकड़ में विकसित हो रहे बुंदेलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अधिकारियों द्वारा सी.ई.ओ. बुंदेलखण्ड औद्योगिक विकास प्राधिकरण संजय खत्री की अध्यक्षता में पाँच सदस्यीय दल ने 8, 9, व 10 अप्रैल को मध्यप्रदेश का दौरा किया गया।

डेलिगेशन द्वारा कार्यकारी संचालक, एम.पी.आई.डी.सी., क्षेत्रीय कार्यालय, इन्दौर हिमांशु प्रजापति से 9 अप्रैल को मुलाकात की, जहाँ पर उनके द्वारा पी.एम. मित्र पार्क एवं अन्य औद्योगिक परियोजनाओं पर प्रस्तुति दी गई तथा मध्यप्रदेश को निवेशकों की पहली प्राथमिकता बनाए जाने के संबंध में शासन स्तर से किए जा रहे विभिन्न प्रयासों, निवेश प्रोत्साहन पॉलिसी, अधोसंरचनाओं की गुणवत्ता तथा प्लानिंग के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

### डेलिगेशन के सदस्य मध्यप्रदेश मॉडल से काफी प्रभावित हुए एवं इसे अपने क्षेत्र में लागू करेंगे

दल द्वारा यह बताया गया कि इन्दौर क्षेत्र के पी.एम. मित्र पार्क एवं पीथमपुर की विख्यात छवि के कारण उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा उन्हें मध्यप्रदेश से निवेश आकर्षण एवं अन्य चीजों को समझने हेतु भेजा गया है। दल द्वारा स्मार्ट इण्डस्ट्रीयल पार्क एवं मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्क का भी भ्रमण किया गया एवं इस संबंध में बारिकी से जानकारी प्राप्त की गई। इसी प्रकार 10 अप्रैल को दल के द्वारा पी.एम. मित्र पार्क का दौरा किया गया, जहाँ पर दोनों राज्यों की टेक्निकल टीम ने साथ बैठकर परियोजना का बारिकी से अध्ययन किया। जिसमें कि ले-आऊट प्लानिंग, क्रॉस सेक्शन, डी.पी.आर. आदि शामिल थे। डेलिगेशन के सदस्य मध्यप्रदेश मॉडल से काफी प्रभावित हुए एवं इसे अपने क्षेत्र में लागू करेंगे।

# जिले को मिला है 15 हजार बालिकाओं के टीकाकरण का लक्ष्य, अब तक 80 प्रतिशत पूरा

### 40 दिन में 11876 बालिकाओं का हो चुका है एचपीवी टीकाकरण

**बैतूल।** बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए एचपीवी टीकाकरण किया जा रहा है। यह अभियान 28 फरवरी से शुरू हुआ था। अभियान के 40 दिन पूरे हो चुके हैं। इस दौरान बैतूल जिले में करीब 11,876 से अधिक किशोरियों (बालिकाओं) का टीकाकरण हो चुका है, जो कि कुल लक्ष्य का 80 फीसदी है। वैसे जिले को 15 हजार टीकाकरण का लक्ष्य मिला है। बताया जा रहा है कि जिले को 15 हजार वैक्सीन डोज मिले थे। जिसमें से 11876 डोज लगाये जा चुके है, शेष डोज का स्टॉक रखा हुआ है, इस बचे हुए डोज से लक्ष्य को पूरा किया जाएगा। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक अभियान में आंगनवाड़ी, शिक्षा विभाग और फील्ड स्टाफ की सक्रिय भूमिका रही है। चिकित्सकों का कहना है कि सर्वाइकल कैंसर किसी भी उम्र में हो सकता है, लेकिन 30 साल के बाद इसके होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है। किशोर अवस्था में ही एचपीवी वैक्सीन लगवा लेने से जोखिम काफी कम हो जाता है। यह टीका प्रतिरक्षा प्रणाली को एंटीबॉडी बनाने के लिए प्रेरित करता है। जो वायरस से लडक़र संक्रमण को फैलने से रोकते है।

**घोड़ाडोंगरी ब्लाक में सबसे अधिक टीकाकरण-** एचपीवी टीकाकरण को लेकर सबसे बेहतर स्थिति घोडाडोंगरी ब्लाक की है। यहां टीकाकरण के लिए 138 सत्र आयोजित किये गये। जिसमें 1699 बालिकाओं का टीकाकरण हुआ। वहीं दूसरी तरफ बैतूल बाजार क्षेत्र में सबसे कम टीकाकरण हुआ है। यहां 56 सत्र आयोजित किये गये थे, जिसमें मात्र 477 बालिकाओं का टीकाकरण हुआ। दूसरे नंबर पर आमला ब्लाक है। यहां टीकाकरण के 87 सत्र आयोजित किये गये। जिसमें 1487 बालिकाओं को टीके लगाये गये है। जिला टीकाकरण अधिकारी प्रांजल उपाध्याय ने बताया कि टीकाकरण को लेकर बैतूल जिला प्रदेश में 11-12वें स्थान पर है।

**800 के आसपास डोज स्टॉक में उपलब्ध-** जिले को एचपीवी टीकाकरण के लिए 15 हजार डोज मिले थे। जिसमें से जिले के सभी ब्लाक को टीकाकरण के लिए डोज भेज दिये गये है। अभी 800 के आसपास डोज बफर स्टॉक के

लिए रखा गया है। जिस ब्लाक में डोज खत्म हो जायेंगे, उन्हें स्टॉक में रखा हुआ डोज उपलब्ध कराया जायेगा। जिला टीकाकरण अधिकारी प्रांजल उपाध्याय ने बताय कि एचपीवी टीकाकरण के लिए लगातार सत्र आयोजित किये जा रहे है। जो डोज शेष बचे है, यह डोज आने वाले समय में बालिकाओं को लगाये जायेगे। उम्मीद है कि जिला जल्द ही 15 हजार के लक्ष्य को हासिल कर लेगा।

**अफवाहों के बावजूद 80 फीसदी टीकाकरण बड़ी उपलब्धि-** केंद्र सरकार द्वारा सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम करने निःशुल्क लगाए जा रहे एचपीवी वैक्सीन को लेकर अफवाहों के बीच आदिवासी बहुल बैतूल जिले में 80 फीसदी वैक्सीनेशन पूर्ण हो गया है। बताया जा रहा है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा करवाए गए कई मेटाएनालिसिस और स्टडी में यह सामने आया है कि एचपीवी वैक्सीन लगवाने के बाद सर्वाइकल कैंसर से 85 से 90 फीसदी तक बचाव होता है। महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर के बाद दूसरा सर्वाधिक कैंसर सर्वाइकल कैंसर होता है। सर्वाइकल कैंसर से बचने 14 से 15 वर्ष के बीच की बालिकाओं को यदि एचपीवी वैक्सीन लग जाए तो वैक्सीन लगवाने वाली बालिकाओं को भविष्य में सर्वाइकल कैंसर होने की संभावना 85 से 90 फीसदी तक कम हो जाती है।

**जिले में एचपीवी टीकाकरण की ब्लाकवार स्थिति, ब्लाक आयोजित सत्र टीकाकरण**

| ब्लाक | आयोजित सत्र | टीकाकरण |
|---|---|---|
| आमला | 87 | 1487 |
| आठनेर | 211 | 864 |
| बैतूल | 119 | 1397 |
| बै.बा. | 56 | 477 |
| भैंसदेही | 36 | 1154 |
| भीमपुर | 65 | 1278 |
| चिचोली | 32 | 932 |
| घोड़ाडोंगरी | 138 | 1699 |
| मुलताई | 42 | 1000 |
| प्रभातपट्टन | 69 | 868 |
| शाहपुर | 59 | 720 |
| टोटल | 914 | 11876 |

**इनका कहना है -**

जिले में अभी तक 80 फीसदी तक वैक्सीनेशन हो चुका है। यह वैक्सीन सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए पूरी तरह से कारगर है। इस वैक्सीन से किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं है।

**- प्रांजल उपाध्याय,** जिला टीकाकरण अधिकारी, बैतूल

## समय पर टीकाकरण ही सर्वाइकल कैंसर से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय : विधायक डॉ. पंडाग्रे

### पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय एवं शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सारणी की छात्राओं को लगाई एचपीवी वैक्सीन

**बैतूल।** बालिकाओं के स्वास्थ्य संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय सारणी एवं शासकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय सारणी में शुक्रवार को निःशुल्क एचपीवी टीकाकरण अभियान का शुभारंभ किया गया। इस दौरान छात्राओं को एचपीवी वैक्सीन लगाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने विशेषज्ञ चिकित्सक के रूप में छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह

अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चलाए जा रहे राष्ट्रीय प्रयासों के अंतर्गत संचालित है, जिसका उद्देश्य 14 वर्ष से अधिक आयु की बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से सुरक्षा प्रदान करना है। उन्होंने सर्वाइकल कैंसर के संभावित लक्षण, इसके खतरे एवं एचपीवी टीकाकरण के महत्व के बारे में विस्तृत एवं सरल भाषा में जानकारी दी। उन्होंने बालिकाओं को जागरूक करते हुए कहा कि समय पर टीकाकरण ही इस गंभीर बीमारी से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है। विधायक डॉ. पंडाग्रे ने कहा कि यह अभियान महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए एक संजीवनी सिद्ध होगा और भविष्य में सर्वाइकल कैंसर के मामलों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने क्षेत्रवासियों से अपील की कि वे अपनी 14 वर्ष से अधिक आयु की बालिकाओं को इस निःशुल्क टीकाकरण अभियान का लाभ दिलाकर उन्हें एक सुरक्षित एवं स्वस्थ भविष्य प्रदान करें। कार्यक्रम के दौरान नपा अध्यक्ष किशोर बरदें, राजेश आहूजा, गोलू राजपूत, सुभाष चंद्रा सहित जनप्रतिनिधि एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

# गेहूं खरीदी घोषणा केवल दिखावा, छोटे किसान परेशानः ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर

**सोहागपुर।** प्रदेश शासन भले ही छोटे किसानों से गेहूं खरीदी करने की घोषणा कर दी है। लेकिन सोहागपुर विधानसभा मुख्यालय के समीपवर्ती ग्राम करनपुर आदि में गेहूं खरीदी छोटे किसानों के लिए अभिशाप बनकर खड़ी है। इस संबंध में विगत दिवस जिला मुख्यालय नर्मदापुरम में जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में कलेक्टर कार्यालय नर्मदापुरम का घेराव किया गया था। लेकिन इसका परिणाम धरातल पर नहीं उतरा है। इस संबंध में ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर ने इस प्रतिनिधि को बताया कि सरकार ने 10 अप्रैल से एक से पांच एकड़ जमीन वाले किसानों से गेहूं खरीदी की घोषणा की थी। बेचारे छोटे छोटे किसानों ने ट्रेक्टर ट्रालियों को किराए लेकर गंतव्य स्थान तक गेहूं खरीदी केन्द्रों पर लेकर आए। लेकिन वहां न तो कोई सोसायटी का कर्मचारी मिला,न तोल कांटा,न डायलाना दिखा। चूंकि ट्रेक्टर ट्रालियों का एक दिन का किराया दो से ढाई हजार रुपए होता है। ऐसे में छोटा किसान क्या करता इसी आशा में गेहूं सोहागपुर के समीपवर्ती ग्राम करनपुर स्थित मधुबन

वेयरहाउस में जिसकी खरीदी आदिम जाति सेवा सहकारी समिति टेकापार को गेहूं उपार्जन का कार्य कर रही है । वहां किसानों का अनाज पड़ा हुआ है।आज दिनांक तक यहां कोई समिति का कर्मचारी नहीं है। और न ही गेहूं खरीदने का कार्य शुरू हुआ है। सहकारी समिति खपरिया तहसील सोहागपुर एवं समिति करणपुर आदि हैं। श्री ठाकुर ने आगे बताया कि यदि सरकार कोई घोषणा नहीं करती तब किसान अपनी फसल घर पर सुरक्षित रखता। लेकिन अब फसल उम्मीद के साथ वेयरहाउस तक पहुंच गई। ऐसे में कोई समिति वाले नहीं हैं। वहीं मौसम भी करवट ले रहा है। जिसमें बरसात होने की संभावना प्रबल है। आखिर इस होने वाली किसानों की नुकसानी की हर पाई कौन करेगा।यह बड़ा सवाल जनता-जनार्दन को खाए जा रहा है। आपने नवनियुक्त कलेक्टर से मामले में संज्ञान लेने का आग्रह किया है। तथा किसानों की जनभावनाओं को निर्णय लेने की गुजारिश की है।इधर ग्राम किवलारी के किसान राम हजूर पटेल ने भी आरोप लगाया है कि सोहागपुर के किवलारी के समीपवर्ती एक वेयरहाउस में जब मैं अपनी गेहूं की फसल लेकर गया तो वेयरहाउस में बाहर से ताला लगा हुआ था। श्री पटेल ने वेयरहाउस एवं ट्रेक्टर ट्रालियों के फोटो एवं वीडियो सोशल मीडिया पर डाल दिए हैं। कुछ मिलकर सरकार किसानों को पलीता लगाने की ओर बढ़ रही है। चित्र ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष सुधीर ठाकुर ने उपलब्ध कराए हैं।

# अमेरिका-ईरान में युद्ध विराम: ट्रंप रजामंद ना होते तो क्या करते?

**डॉ. सुधीर सक्सेना**

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अंततः महाविनाश की आशंकाओं और दोनों गोलार्द्धों में धुकधुकी के बीच अमेरिका और ईरान के बीच युद्धविराम हो गया। लेकिन सच यह है कि अमेरिका और ईरान के दरम्यां जंग चौदह दिनों के लिए टली है, खत्म नहीं हुई है। इसकी झलक अमेरिका और इस्रायल के साझा आक्रमण के शिकार हुए ईरान के उस दस सूत्री प्रस्ताव में मिलती है, जिस पर अमेरिका के बड़बोले और दंभी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तब रजामंदी जाहिर की, जब ईरान को पाषाण युग में पहुंचा देने की उनकी मोहलत में कुछ ही घंटे शेष थे। उनकी धमकी ने यह उजागर कर दिया था कि उन्नत लोकतंत्र के महाबली राष्ट्र के मुखिया होने के बावजूद ट्रंप के मन में मानव जीवन, सभ्यता और संस्कृति के प्रति कोई सम्मान शेष नहीं है और वह अपनी ज़िद या खब्त में कुछ भी दांव पर लगा सकते हैं।

करीब 40 दिन चली जंग के घटनाक्रम पर गौर करें तो 28 फरवरी के शुरुआती दौर में अयातुल्लाह खामनेई और अली लारीजानी की मृत्यु के बाद कुछ भी अमेरिकी मंशा के अनुरूप नहीं हुआ। ईरान में कू-दे-ता खामख्याली रहा और पेजेश्कियान, अरघाची और गालीबफ के सम्मिलित नेतृत्व में ईरान ने अमेरिका और इस्रायल से बखूबी पंजा लड़ाया और घुटने टेकने के बजाय करारे प्रत्यक्रमण से उनकी व्यूह-रचना के अंजर-पंजर ढीले कर दिए। इससे वियतनाम और अफगानिस्तान की भांति ईरान भी अमेरिकी गरूर चकनाचूर करने वालों की गर्वीली और विरल पांत में खड़ा हो गया। ईरान ने इस्रायल का आयरन डोम ही नहीं भेदा, बल्कि दियागोगार्सिया तक प्रहार कर अमेरिका की पेशानी पर पसीना ला दिया। ईरान के कामयाबी से किला लड़ाने का नतीजा यह हुआ कि ट्रंप को अपने पांव पीछे खींचने पड़े। अमेरिका में उनका विरोध

दिनोंदिन सघन होता जा रहा था और उन्हें सबसे निकृष्ट या बदतर राष्ट्रपति की संज्ञा दी जा रही थी, तथा उनके खिलाफ अविश्वास या महाभियोग की संभावना उठ खड़ी हुई थी। ब्रिटेन, स्पेन, जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों ने उनसे किनारा कर लिया था और नाटो में दरारें उभर आई थीं। स्वयं अमेरिका ने अपने अनेक कीमती विमान गंवाए। युद्ध का लंबा और खर्चीला होना उसके लिए घाटे का सौदा था। दूसरे, यूएई, सऊदी अरब, कतर, बहरीन, ओमान आदि देश सुरक्षा के लिए उस पर अपना भरोसा गंवा चुके थे। यद्यपि अभी भी अमेरिका इस्रायल के अलावा किसी भी अरब या खाड़ी देश का सगा नहीं है, किन्तु यह एहसास लगातार गहरा हो रहा था कि ट्रंप ने 'बिबी' के उकसावे में आकर भूल-गलती की। ऐसे में अशिष्टता की हदों को लांघ चुके ट्रंप के सामने और कोई चारा नहीं था कि वह युद्धविराम पर राजी हों। देश-दुनिया में ट्रंप और अमेरिका की ऐसी भद्द पिटने का किसी को गुमान न था।

इस सारे घटनाक्रम का अहम पहलू यह है कि आतंकवादी राष्ट्र (पाकिस्तान) के फौजी शासक फील्ड मार्शल मुनीर के माथे तात्कालिक शांति का सेहरा बंधा। मध्य पूर्व में राजनय में भारत नितांत विफल रहा। लेकिन जंग से कुछ घंटे पूर्व नेसेट में सम्मानित मोदी का इस्रायल को फादरलैंड कहना और जयशंकर का मध्यस्थता को दलाली बताना अनौचित्यपूर्ण था। बहरहाल, युद्धविराम के बावजूद इस्रायल की दक्षिण लेबनान में बमबारी दर्शाती है कि तेल अवीव ने ग्रेटर इस्रायल की मुहिम त्यागी नहीं है। यकीनन उसे अपनी रणनीति नये सिरे से बनानी होगी। जंग के फलस्वरूप होर्मुज जलडमरूमध्य के रूप में ईरान को ब्लैंक चेक मिल गया है। वह होर्मुज पर नियंत्रण तो रखेगा ही, हर जहाज से दो मिलियन डॉलर चुंगी भी वसूलेगा। यह सन 1956 के स्वेज प्रसंग की याद दिलाता है। यह जंग नव-उपनिवेशवादी अमेरिका के वर्चस्व के क्रमिक अंत और मॉस्को-बीजिंग-तेहरान धुरी की मजबूती की शुरुआत है।

करीब डेढ़ करोड़ ईरानियों का शहादत के लिए पंजीयन, लाखों ईरानियों का मानव श्रृंखला बनाना और ईरानी सिने-निर्माता जफर पनाही का युद्ध की लपटों के बीच वतन लौटना मानीखेज घटनाएं हैं। बारूदी धुएं और धमाकों के बीच अली घनसारी का तार पर छेड़ा अमन का राग सदियों तक फिजाओं में गूंजता रहेगा– अलबत्ता आइए हम दुआ करें कि युद्धविराम से शांति का मार्ग प्रशस्त होगा।

## योग से मिलता है शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक लाभ

**भोपाल।** योग से व्यक्ति को शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक लाभ मिलता है। योग विद्या की शुरुआत सृष्टि के आरंभ से ही हो गई थी। हिरण्यगर्भ महाराज ने महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को योग विद्या का ज्ञान दिया। इन ऋषियों ने महर्षि पतंजलि को यह विद्या प्रदान की और योग दर्शन प्रकाश में आया।

भारतीय योग संस्थान के पश्चिम जिला भोपाल के तत्वावधान में सलैया स्थित बीडीए पार्क केंद्र में संपन्न साठवे स्थापना दिवस कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में वरिष्ठ साहित्यकार श्रीराम माहेश्वरी ने यह बात कही। वे मुख्य अतिथि के रुप में बोल रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने अष्टांग योग के आठ अंगों तथा योग सिद्धि पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ साधक आरबी खरे ने योग से होने वाले लाभ बताए। उन्होंने चंद्रभेदी और उज्जायी प्राणायाम पर मार्गदर्शन किया। आरंभ में अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया तथा दीप प्रज्ज्वलित किया। महिला साधकों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। श्रीमती नैना शर्मा एवं सावित्री शर्मा द्वारा योगाभ्या करवाया गया। केंद्र प्रमुख भागवत गुप्ता ने संस्थान और योग मंजरी का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि दस अप्रैल 1967 को योग संस्थान की स्थापना हुई थी। अब तक चार हजार पांच सौ से अधिक इसकी शाखाएं हो चुकी हैं। एस पी गुप्ता ने श्रीराम माहेश्वरी को योग मंजरी पत्रिका भेंट की। अंत में विलास आफले ने आभार व्यक्त किया।

## डॉ. महाडिक को मध्यप्रदेश गौरव पुरस्कार

**भोपाल।** उज्जैन, मध्य प्रदेश के प्रतिष्ठित चिकित्सक एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. विजय महाडिक को मध्यप्रदेश गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया डॉ. महाडिक पिछले 50 से अधिक वर्षों से गरीब और वंचित लोगों को सहज, सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

1974 से अब तक उन्होंने 45 लाख से अधिक मरीजों का उपचार किया है तथा एक लाख से अधिक क्षय (टीबी) रोगियों का निःशुल्क इलाज किया है। उन्होंने मध्य प्रदेश में धर्मार्थ स्वास्थ्य संस्थानों की स्थापना, चिकित्सा शिक्षा में सुधार और जनस्वास्थ्य नीतियों में महत्वपूर्ण बदलाव की पहल की।

जनस्वास्थ्य, ग्रामीण सशक्तिकरण और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में उनकी असाधारण सेवा निःस्वार्थ राष्ट्रसेवा के लिए GRIPS फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक अत्यंत गरिमामय सम्मान समारोह में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री मनोज श्रीवास्तव, विद्या भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉक्टर रविंद्र कान्हेरे, सद्गुरु नागरिक सहकारी बँक के अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता विलास बुचके, सद्गुरु सेवा मंडळ की अध्यक्ष श्रीमती रोहिणी शिंगवेकर, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ अभिजीत देशमुख मध्यप्रदेश मराठा समाज के अध्यक्ष वरिष्ठ वास्तुविद प्रवीण जगताप के साथ डॉ. महाडिक को मध्यप्रदेश गौरव तथा मराठी गौरव सम्मान से सम्मानित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उन्हे सन्मानित कर हमारा सम्मान बढ़ा है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भोपाल में विविध क्षेत्र में कार्यरत प्रतिष्ठित और प्रभावशाली जन उपस्थित थे।

## अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के पूर्व 100 दिवसीय निःशुल्क लाइव योग सत्र का होगा आयोजन

**बैतूल।** 12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 के पूर्व देशभर में जन भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 100 दिवसीय निःशुल्क लाइव योग सत्र कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, आयुष मंत्रालय द्वारा संचालित किया जाएगा। जिला आयुष अधिकारी बैतूल डॉ. योगेश चौकीकर ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य योग को जन-आंदोलन के रूप में स्थापित करना तथा आमजन के दैनिक जीवन में योग को शामिल करना है। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों के लिए 14 दिवसीय संरचित योग सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनका प्रसारण ऑनलाइन माध्यम से किया जाएगा।कार्यक्रम का समापन 27 मई 2026 को एक भव्य ऑनलाइन योग कार्यक्रम के साथ किया जाना प्रस्तावित है। उन्होंने विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों सहित समस्त नागरिकों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इन योग सत्रों में भाग लें।

### एमसीयू में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान आयोजित

## मीडिया इंडस्ट्री और अकादमिक जगत में विमर्श जरुरी: अच्युतानंदजी

**भोपाल।** आजादी से पहले और बाद की पत्रकारिता के मूल्यों में व्यापक बदलाव आए हैं। आज पत्रकारिता में लोकहित की तुलना में महत्वाकांक्षाएं हावी हैं। पूर्व की पत्रकारिता में नैतिक स्तर उच्च कोटि का था। वह दौर और उस दौर के लोग अद्भुत थे। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने उसी दौरान देश की राजनीति, साहित्य, संस्कृति और सभ्यता को अपनी तेजस्वी पत्रकारिता से ऊपर उठाने का काम किया। वे केवल एक पत्रकार ही नहीं बल्कि एक योद्धा और विलक्षण संत थे। एक ऐसे योद्धा संपादक जिन्हें सब प्यार करते थे और जिनकी बातें भी सब मानते थे। उक्त बात वरिष्ठ पत्रकार और संपादक तथा एमसीयू के पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र ने कही। वे माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में बतौर अतिथि वक्ता बोल रहे थे।

उन्होंने बताया कि उस दौर का कोई ऐसा बड़ा नेता साहित्यकार और पत्रकार नहीं होगा जो उनसे मिलने उनके छोटे से गाँव बाबई और कर्मस्थली खंडवा न गया हो। उनके अनुसार माखनलालजी ने स्वयं तो आदर्श पत्रकारिता की ही बल्कि उस समय के कई पत्रकार-संपादकों ने भी उनकी प्रेरणा और सानिध्य से देश की राजनीति, भाषा और साहित्य के उत्थान का काम किया.

उन्होंने चतुर्वेदीजी के समकालीन माधवराव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी, कल्याण पत्रिका के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार का भी सम्मान से जिक्र किया और सभागार में उपस्थित नवागत पत्रकारों को उनके बारे में पढ़ने व प्रेरणा लेने के लिए कहा।

'पुष्प की अभिलाषा' कविता का मर्म समझने का आग्रह करते हुए भावुकता से कहा कि सोचिए उस कल्पना के बारे में जो उस पथ पर फेंक देने का आग्रह करती है जहाँ वीर सैनिक मातृभूमि पर अपना शीश चढ़ाने जा रहे हैं आज वह कविता इसीलिए कालजयी है क्योंकि देशके प्रति गहन भाव से उपजी है। 'कल्याण' पत्रिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि आज भी वह पत्रिका बिना विज्ञापन और पुस्तक समीक्षा के निकलती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात लेखक एवं विचारक मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि माखनलालजी ने पत्रकारिता की विद्यापीठ की परिकल्पना की थी। जिस दौर में पत्रकारिता को शस्त्र की तरह इस्तेमाल किया जाने लगा था उस समय उन्होंने उसे शास्त्र माना और इस बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता पढ़ने और पढ़ाने की सख्त जरुरत है। वे उस युग के प्रखर और दमदार पत्रकार बने जब अखबार छापना ही देशद्रोह माना जाता था। भारत की भाषा, चिंतन और अस्मिता को लेकर वे सजग थे। तिलक और गांधी की दो धाराओं से गुजरते हुए हमें माखनलाल जी को समझना होगा। उन्होंने तिलक से तेज, ओज और आक्रामकता ली जबकि गांधी से विनम्रता, नैतिकता और सौजन्यता ग्रहण की। वे इन दोनों धाराओं के संगम पर खड़े थे। मनोज जी ने कहा कि शब्द जब सत्य से उत्पन्न होता है तब वह तोप से भी ज्यादा असरकारी होता है।

आरंभ में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत उद्बोधन दिया और मिश्र जी के सम्मान में कहा कि आज जिस परिसर में हम बैठे हैं उसका सपना जिन आँखों ने देखा था वे आज हमारे बीच हैं। मिश्र जी की इस विश्वविद्यालय के विकास में अहम् भूमिका हैद्य

इस अवसर पर पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों द्वारा तैयार विकल्प समाचार पत्र का विमोचन भी हुआ। सीएसआर के तहत एमपी आनलाइन ने विश्वविद्यालय को एक ई-रिक्शा भेंट किया। इसका शुभारंभ भी अतिथियों ने किया। आभार कुलसचिव पी. शशिकला ने माना और सुंदर संचालन संस्कृतिकर्मी विनय उपाध्याय ने किया।

## भूतपूर्व सैनिकों की मासिक बैठक 13 अप्रैल को

**बैतूल।** भूतपूर्व सैनिकों की मासिक बैठक 13 अप्रैल को प्रातः 11.30 बजे से जिला सैनिक कल्याण कार्यालय में आयोजित की जाएगी। कैप्टन आईएन सुमीत सिंह सेवानिवृत्ति जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने बताया कि बैठक के दौरान हार्टफुलनेस मेडिटेशन का आयोजन भी किया जाएगा। उन्होंने सभी भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिजनों से बैठक में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

## सौरभ संजय सोनवाने बैतूल के नए कलेक्टर

**बैतूल।** जिले में दो साल से पदस्थ कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी का रीवा तबादला कर दिया है। गुरुवार देर रात जारी प्रशासनिक अधिकारियों की तबादला सूची में सूर्यवंशी को रीवा कलेक्टर बनाया गया है। उनके स्थान पर रीवा के निगम आयुक्त रहे सौरभ संजय सोनवाने को बैतूल कलेक्टर नियुक्त किया गया है। 2017 बैच के आईएएस अधिकारी सोनवाने ने तीसरे प्रयास में संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की परीक्षा उत्तीर्ण कर 2017 बैच के आईएएस अधिकारी बने। वहीं, निवर्तमान कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी का कार्यकाल भी उल्लेखनीय रहा। 2012 बैच के आईएएस अधिकारी सूर्यवंशी जनवरी 2024 से अप्रैल 2026 तक बैतूल कलेक्टर रहे और वर्तमान में रीवा कलेक्टर के रूप में पदस्थ हैं। वे

रतलाम कलेक्टर भी रह चुके हैं और एक सख्त व सक्रिय अधिकारी के रूप में पहचाने जाते हैं। बैतूल में उनके कार्यकाल के दौरान आदि कर्मयोगी अभियान और जल संचय-जन भागीदारी' जैसे प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। वहीं राज्य स्तर पर टीबी उन्मूलन, निर्वाचन कार्यों और प्रशासनिक डिजिटाइजेशन में बेहतर कार्य के लिए जिले को सम्मान और सराहना प्राप्त हुई। साथ ही, वे भू-माफियाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई और देर रात निरीक्षण जैसी सक्रिय कार्यशैली के लिए भी चर्चा में रहे।

## भाजपा प्रदेश प्रवक्ता बनने पर विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे का सारणी में भव्य स्वागत

**बैतूल।** आमला-सारणी के लोकप्रिय विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे के भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता नियुक्त होने पर सारणी मंडल में उनका भव्य स्वागत किया गया। उनके प्रथम आगमन पर कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों और पटाखों के साथ पुष्प वर्षा कर जोरदार अभिनंदन किया। मंडल कार्यालय में उत्साहपूर्ण माहौल के बीच कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए खुशी जाहिर की। कार्यक्रम की शुरुआत मां भारती, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलन कर की गई। इस अवसर पर विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, मंडल प्रभारी राजेश आहूजा, नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे, उपाध्यक्ष जगदीश पवार, मंडल अध्यक्ष गोलू राजपूत, विधायक प्रतिनिधि सुधा चंद्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि मंच पर उपस्थित रहे। मंडल अध्यक्ष गोलू राजपूत ने स्वागत भाषण देते हुए डॉ. पंडाग्रे को प्रदेश प्रवक्ता बनाए जाने पर बधाई दी। वहीं नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे ने उनके कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में सारणी क्षेत्र और आमला विधानसभा में अनेक विकास कार्य हुए हैं, जिनमें 660 मेगावाट सारणी पावर प्लांट जैसी महत्वपूर्ण उपलब्धियां शामिल हैं। मंडल प्रभारी राजेश आहूजा ने अपने उद्बोधन में कहा कि डॉ. पंडाग्रे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं और आज वे भाजपा मध्यप्रदेश की सशक्त आवाज बनकर उभरे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर भी बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी। अपने संबोधन में विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने कार्यकर्ताओं से पार्टी के प्रति ईमानदारी और समर्पण बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समर्पित कार्यकर्ताओं को पार्टी में समय आने पर बड़ी जिम्मेदारियां अवश्य मिलती हैं। अंत में उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री विनय मदने ने किया। इस दौरान बड़ी संख्या में मंडल पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

## धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश ही जीवन का उद्देश्य: सुधांशु महाराज

### केंद्रीय मंत्री डीडी उईके व विधायक डॉ. पंडाग्रे के साथ सुधांशु महाराज ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया चार दिवसीय भक्ति सत्संग महोत्सव का शुभारंभ

**बैतूल।** पुलिस ग्राउंड में चार दिवसीय विराट भक्ति सत्संग महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। विश्व जागृति मिशन के परमाध्यक्ष सुधांशुजी महाराज ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें राज्य अतिथि के रूप में सम्मानपूर्वक स्वागत दिया गया। आयोजन स्थल पर सुबह से ही भक्तिमय माहौल बना रहा और हजारों श्रद्धालु सत्संग में शामिल हुए। शुभारंभ अवसर पर केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्यमंत्री दुर्गादास उईके तथा आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे भी मौजूद रहे। दोनों जनप्रतिनिधियों ने सत्संग श्रवण करते हुए पूज्य महाराजश्री का स्वागत और अभिनंदन किया। कार्यक्रम के मुख्य यजमान अशोक हिरानी द्वारा व्यास पूजन संपन्न हुआ, जबकि आयोजन समिति के प्रधान डॉ. विनय चौहान सहित अन्य पदाधिकारी और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। अपने प्रवचन में सुधांशु महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत गीता जीवन को दिशा देने वाली संजीवनी है। गीता जीवन को पावन बनाती है और आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश को

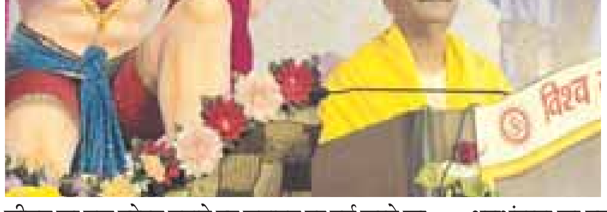

जीवन का मूल उद्देश्य बताते हुए सनातन पर गर्व करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मृत्यु केवल एक अवस्था है, भय का विषय नहीं और मनुष्य को अपने जीवन में गीता के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए। महाराजश्री ने श्रद्धालुओं को भाव और भक्ति के माध्यम से परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग बताते कहा कि सच्चे मन से प्रेम और समर्पण ही ईश्वर तक पहुंचने का सबसे सरल माध्यम है। उन्होंने जीवन की क्षणभंगुरता का उल्लेख करते कहा कि बिना आध्यात्मिक साधना के जीवन व्यर्थ हो जाता है। कार्यक्रम में मंच संचालन आचार्य अनिल झा ने किया। आयोजन समिति के डॉ. विनय चौहान ने बताया कि चार दिवसीय इस भक्ति सत्संग महोत्सव में प्रातः और सायंकालीन सत्र होंगे, जिनमें अधिक से अधिक संख्या में श्रद्धालुओं से परिवार सहित शामिल होने की अपील की गई है।

**रविवार को होगा मंत्र दीक्षा संस्कार, पंजीयन अनिवार्य-** डॉ. चौहान ने जानकारी दी कि रविवार को प्रातःकालीन सत्र के बाद दोपहर में मंत्र दीक्षा संस्कार आयोजित किया जाएगा, जिसके लिए पूर्व पंजीयन अनिवार्य रहेगा। यह आयोजन जिले में लंबे समय बाद आयोजित हो रहा है, जिससे श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखा जा रहा है।

## हिंदू पक्ष की हाईकोर्ट में दलीलें, सभी पिलरों पर नक्काशी का जिक्र

# भोजशाला में मंदिर जैसी नक्काशी हमें मिले पूजा का अधिकार

**भोपाल।** धार भोजशाला को लेकर एमपी हाईकोर्ट में हर दिन सुनवाई चल रही है। हिंदू फॉर जस्टिस ने गुरुवार को भोजशाला-कमल मौला मामले में अपनी दलीलें पूरी कर ली हैं। इस दौरान हिंदू संगठन ने एएसआई की सर्वे रिपोर्ट पर जोर दिया है। साथ ही वकील विष्णु शंकर जैन ने दावा किया है कि मौजूदा ढांचा धार जिले की भोजशाला में तोड़े गए सरस्वती मंदिर से मिले मलबे का इस्तेमाल करके बनाया गया था। वहीं, हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस के विष्णु शंकर जैन ने एएसआई सर्वे का हवाला दिया। उन्होंने जस्टिस विजय कुमार शुक्ला और आलोक अवस्थी के सामने दलील दी कि इस जगह पर 11वीं और 12वीं सदी के बीच परमार वंश द्वारा बनाया गया, एक हिंदू धार्मिक ढांचा मौजूद था। साथ ही उन्होंने दावा किया कि यह सरस्वती मंदिर और संस्कृत सीखने का केंद्र था। साथ ही एएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि 14वीं सदी के बाद मुस्लिम हमलावरों ने इस हिंदू ढांचे को आंशिक रूप से नष्ट कर दिया था।

**हिंदू धार्मिक ढांचा था मौजूद, मंदिर के रूप में थी पहचान-** इसके साथ ही उन्होंने बताया कि 1903 और 1972-73 की पिछली एएसआई रिपोर्टों ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि इस जगह पर एक हिंदू धार्मिक ढांचा मौजूद था, जिसमें एक संस्कृत स्कूल चलता था। इसे हमलावरों ने नुकसान पहुंचाया था। साथ ही इमारत के अंदर मिले शिलालेख 'प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम,1904' की धारा 2 (2) के तहत पुरावशेष की श्रेणी में आता है। हिंदू संगठन ने अपनी दलील में यह भी कहा कि वायसराय लॉर्ड कर्जन ने भी 1904 में पेश की गई वार्षिक रिपोर्ट में जिक्र किया है कि इस जगह की पहचान एक मंदिर के रूप में थी। साथ ही इसकी चारों दिशाओं में लंबी-लंबी कतारों में खंभे लगे हुए हैं। जिन्हें 106 और 82 खंभों से सजाया गया है। उन्होंने कहा कि इन खंभों और छोटे खंभों पर बनी कला और वास्तुकला से पता चलता है कि ये मूल रूप से मंदिर का हिस्सा था।

**नक्काशी में देवी-देवताओं की तस्वीरें-** वहीं, इन नक्काशी में गणेश, ब्रह्मा, नरसिंह भैरव और विभिन्न देवी देवताओं, इंसानों और जानवरों की आकृतियां शामिल हैं। इनमें शेर, हाथी, घोड़े, कुत्ते, बंदर, सांप, कछुए, हंस और पक्षी प्रमुख हैं। इसके साथ ही विष्णु शंकर जैन ने तर्क दिया कि इस्लामी परंपरा मस्जिदों के भीतर मानव और पशु आकृतियों के चित्रण पर रोक लगाती है। इसलिए ऐसी छवियों को कई जगहों पर छेनी से काटकर हटा दिया गया था। यह विरूपित कर दिया दया था। साथ ही हिंदू संगठन ने यहां पर पूरे साल पूजा की इजाजत मांगी है।

## मोहन सरकार और केंद्र पर तीखा हमला

# 'किसानों के साथ हुआ विश्वासघात, मध्य प्रदेश में 'किसान कल्याण' नहीं 'किसान शोषण' वर्ष मना रही भाजपा : जीतू पटवारी

**भोपाल।** मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जितेंद्र (जीतू) पटवारी ने आज भोपाल में पत्रकारों से चर्चा करते हुए प्रदेश की भाजपा सरकार और केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान पर कड़ा प्रहार किया। पटवारी ने कहा कि जो शिवराज सिंह चौहान खुद को 'पांव-पांव वाले भैया' और 'किसान पुत्र' कहते थे, वे आज 'हवाई जहाज वाले भैया' बन गए हैं और सत्ता के अहंकार में किसानों की बदहाली का मजाक उड़ा रहे हैं।

श्री जितेंद्र (जीतू) पटवारी ने कहा कि भाजपा ने चुनाव के समय किसानों को मोदी की गारंटी दी थी–सोयाबीन का दाम रू. 6000, गेहूं रू. 2700 और धान रू. 3100 प्रति क्विंटल देने का वादा किया था। लेकिन हकीकत में किसानों को अपनी फसल औने-पौने दामों पर बेचनी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि 'मुझे खुशी नहीं होती कि मैं 50 किलो अनाज की बोरी कंधे पर रखकर शिवराज जी के घर जाऊं, लेकिन एक जिम्मेदार विपक्ष के नाते मेरा कर्तव्य है कि मैं उन्हें उनके झूठे वादे याद दिलाऊं।'

संसद में कृषि मंत्री द्वारा किसानों की आय 8 गुना बढ़ने के दावे पर पटवारी ने कहा कि वे स्वयं सागर और विदिशा की मंडियों में किसानों से मिलकर आए हैं। वहाँ 70% किसान, जिन्होंने भाजपा को वोट दिया था, वे भी कह रहे हैं कि सरकार झूठ बोल रही है। आज मध्य प्रदेश का 80% किसान बैंकों का डिफॉल्टर हो चुका है, जिसके लिए सीधे तौर पर भाजपा की नीतियां जिम्मेदार हैं।

पटवारी ने आरोप लगाया कि गेहूं उपार्जन में जानबूझकर देरी की गई ताकि किसानों को मजबूरी में व्यापारियों को फसल बेचनी पड़े। उन्होंने कहा, लगभग '15 लाख क्विंटल गेहूं उपार्जन से पहले ही बिक गया किसानों को घाटा देकर भाजपा से जुड़े व्यापारियों की जेबें भरी गईं। यह किसानों के साथ किया गया एक बड़ा आर्थिक अपराध है।'

पटवारी ने मुख्यमंत्री मोहन यादव को घेरते हुए कहा कि मध्य प्रदेश में भ्रष्टाचार 'कैंसर' की तरह फैल चुका है। पंचायत से लेकर मंत्रालय की पांचवीं मंजिल तक माफियाओं का कब्जा है। उन्होंने कहा कि हालिया ट्रांसफर लिस्ट केवल 'लेन-देन' और भ्रष्टाचार का नतीजा है, जिसका जनता की सेवा से कोई लेना-देना नहीं है।

पटवारी ने मुख्यमंत्री मोहन यादव से आग्रह किया कि वे तबादला उद्योग चलाने के बजाय विशेषज्ञों के साथ बैठकर प्रदेश की समस्याओं के समाधान के लिए गंभीर बैठकें करें। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने सकारात्मक प्रयास नहीं किए, तो आगामी चुनावों में किसान और जनता भाजपा को करारा जवाब देगी।

श्री पटवारी ने अंत में कहा कि रायसेन में होने वाला 'कृषि मेला' किसानों के घावों पर नमक छिड़कने जैसा है। भाजपा ने किसानों को खाद के लिए लाइन में खड़ा किया, बारदाने का संकट पैदा किया और अब उनकी अस्मिता से खेल रही है।

# अब गर्भावस्था में महिला की मौत का कारण आएगा सामने

## डेढ़ घंटे में आएगी रिपोर्ट, नहीं रहेगा पुलिस का इंवॉल्वमेंट ; एम्स में फ्री क्लिनिकल ऑटोप्सी शुरू

**भोपाल।** एमपी मातृ और शिशु स्वास्थ्य के मामले में देश के सबसे पीछे रहने वाला राज्य है। ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, प्रदेश में हर एक लाख प्रसव में 159 माताएं और हर एक हजार जन्म में 40 नवजात अपनी जान गंवा रहे हैं। ये आंकड़े सिर्फ एक नंबर नहीं, बल्कि उन परिवारों की पीड़ा हैं जो समय पर इलाज, संसाधन और सुरक्षित प्रसव सुविधाओं के अभाव में अपनों को खो देते हैं। यही नहीं कई बार मौत की असली वजह सामने नहीं आ पाती, जिससे सुधार के ठोस कदम भी नहीं उठ पाते। अब इसी चुनौती से निपटने के लिए एम्स भोपाल ने एक अहम पहल शुरू की है। यहां गर्भावस्था या प्रसव के दौरान हुई महिलाओं की मौत के मामलों में क्लिनिकल ऑटोप्सी की सुविधा दी जा रही है, जिससे मौत की असली वजह सामने लाई जा सके। खास बात यह है कि यह प्रक्रिया पूरी तरह फ्री है और इसमें पुलिस की कोई भूमिका नहीं होती। परिवार की सहमति से होने वाली इस जांच से न केवल परिजनों को सच्चाई पता चलती है, बल्कि सरकार को भी ऐसा डेटा मिलता है, जिससे भविष्य में मातृ मृत्यु को कम करने की रणनीति तैयार की जा सके। डॉक्टरों के अनुसार, मध्यप्रदेश उन राज्यों में शामिल है जहां मातृ मृत्यु के मामले अपेक्षाकृत अधिक हैं। मातृ मृत्यु का मतलब है कि गर्भावस्था के दौरान, प्रसव के समय या गर्भसमापन के 42 दिनों के भीतर महिला की मौत। ऐसे मामलों को रोकना सरकार की बड़ी जिम्मेदारी होती है।

**अब मौत के कारणों की होगी सटीक पहचान-** इन मामलों में मौत की असली वजह साफ नहीं हो पाती। ऐसे में एम्स भोपाल में क्लिनिकल ऑटोप्सी के जरिए वैज्ञानिक तरीके से कारणों की जांच की जा रही है। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि कौन सी मौत रोकी जा सकती थी और किन मामलों में स्थिति गंभीर थी। यह प्रक्रिया मेडिको-लीगल ऑटोप्सी से अलग होती है। इसमें पुलिस की जरूरत नहीं होती और यह परिवार के अनुरोध पर की जाती है। इसमें शरीर के जरूरी हिस्सों की जांच कर बीमारी या जटिलता की सही वजह पता की जाती है। ऑटोप्सी के बाद डॉक्टर हिस्टोपैथोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी रिपोर्ट तैयार करते हैं। कुछ ही दिनों में यह रिपोर्ट परिवार को दी जाती है। इससे परिजनों को यह समझने में मदद मिलती है कि मौत क्यों हुई और कोई लापरवाही तो नहीं हुई। इस पहल से सरकार को मातृ मृत्यु के मामलों का सटीक और प्रमाणिक डेटा मिलेगा। इसके आधार पर स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, सुविधाओं की कमी और इलाज की खामियों को पहचान कर बेहतर रणनीति बनाई जा सकेगी।

# केन बेतवा लिंक परियोजना के विरोध में 'चिता आंदोलन'

## क्षेत्र की महिलाओं ने कहा-हमें यहीं जला दो या नया गांव दो

**भोपाल।** मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में आदिवासी किसान और महिलाएं केन बेतवा रिवर लिंक परियोजना का विरोध कर रहे हैं। गुरुवार को सैकड़ों लोग नकली चिताओं पर लेट गए। इनमें ज्यादातर महिलाएं थी। इस प्रदर्शन के जरिए महिलाओं ने यह संकेत दिया है कि वे आखिरी सांस तक इस परियोजना का विरोध करते रहेंगे। प्रदर्शन कर रहे लोगों का गांव डूब क्षेत्र में आ रहा है। ऐसे में इनकी मांग है कि हमें अत्याधिक मुआवजा और नया गांव दें। दरअसल, छतरपुर जिले में केन बेतवा नदी लिंक परियोजना को लेकर विरोध लंबे समय से चल रहा है। प्रभावित लोग अलग-अलग तरीके से इसका विरोध जता रहे हैं। गुरुवार को महिलाएं परियोजना के विरोध में नकली चिताओं पर लेट गईं। महिलाएं इसे चिता आंदोलन कह रही हैं। साथ वे मांग कर रही हैं कि हमें या तो न्याय दो या मृत्यु दो। वहीं, पुलिस ने जब इन्हें हटाने की कोशिश की तो इनके साथ हल्की झड़प हो गई। प्रदर्शन कर रहे लोगों का कहना है कि प्रशासन हमें परेशान कर रहा है। मगर हमलोगों ने कसम खाई है कि जब तक हमारी मांगें पूरी नहीं होती है, हम यहां डटे रहेंगे और अपनी लड़ाई जारी रखेंगे।

**पानी की कमी वाले इलाकों में पानी पहुंचाना है मकसद-** गौरतलब है कि इस परियोजना के जरिए केन नदी बेसिन से पानी को बेतवा बेसिन के पानी की कमी वाले इलाकों में पानी पहुंचाना है। इसके लिए छतरपुर जिले में दौधन बांध का निर्माण हो रहा है। साथ ही इसमें 200 किमी लंबा नहर नेटवर्क और सिंचाई-बिजली से जुड़े अन्य निर्माण कार्य शामिल हैं। इस परियोजना के पूरे होने के बाद 10 लाख हेक्टेयर से ज्यादा जमीन की सिंचाई की जरूरतें पूरी होने और बिजली उत्पादन के साथ-साथ लगभग 62 लाख लोगों को पीने का पानी मिलने की उम्मीद है। इस प्रोजेक्ट का मकसद है कि एमपी और यूपी के सूखाग्रस्त इलाकों को पानी मिले। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीने 2024 में खजुराहो आकर इस प्रोजेक्ट की नींव रखी थी।

**प्रदर्शन स्थल के आसपास जाने से रोक लगा दी गई-** वहीं, छतरपुर और पन्ना जिले के प्रशासन ने कुछ इलाकों में बीएनएसएस की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर दी है, जिसके तहत प्रदर्शन स्थलों के आस-पास लोगों की आवाजाही पर रोक लगा दी गई है। इन पाबंदियों के बीच प्रदर्शनकारियों ने केन नदी के बीचों-बीच प्रदर्शन जारी रखा है। कई किसान अपने गांवों के करीब नदी के किनारे पर प्रदर्शन कर रहे हैं।

# समर्थन मूल्य पर 5220 किसानों से हुई 17,965 क्विंटल गेहूँ की खरीदी : खाद्य मंत्री राजपूत

**भोपाल।** खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक 5220 किसानों से 12 हजार 521 क्विंटल गेहूँ की खरीदी की जा चुकी है। गेहूँ का उपार्जन इंदौर, उज्जैन, भोपाल और नर्मदापुरम संभाग में 9 अप्रैल से शुरू हो चुका है। उन्होंने बताया कि शेष संभागों में 15 अप्रैल से गेहूँ का उपार्जन शुरू किया जायेगा। अभी तक एक लाख 48 हजार 247 किसानों द्वारा 6 लाख 74 हजार 290 मीट्रिक टन गेहूँ के विक्रय के लिये स्लॉट बुक किये जा चुके हैं। गेहूँ खरीदी के लिये 3171 उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं। खाद्य मंत्री राजपूत ने बताया है कि रबी विपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये अभी तक 97 हजार 474 किसानों द्वारा 4 लाख 46 हजार 582 मीट्रिक टन गेहूँ के विक्रय के लिये स्लॉट बुक किये जा चुके हैं। किसानों से 2585 रूपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य एवं राज्य सरकार द्वारा घोषित 40 रूपये प्रति क्विंटल बोनस राशि सहित 2625 रूपये प्रति क्विंटल की दर से गेहूँ का उपार्जन किया जा रहा है। गेहूँ के उपार्जन के लिये आवश्यक बारदानों की व्यवस्था की जा चुकी है। उपार्जित गेहूँ को रखने के लिये जूट बारदानों के साथ ही पीपी/एचडीपी बैग एवं जूट के भर्ती बारदाने का उपयोग किया जा रहा है। समर्थन मूल्य पर उपार्जित गेहूँ के सुरक्षित भंडारण की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। उपार्जित गेहूँ में से मुख्य रूप से जिला उज्जैन में 3029, शाजापुर में 2785, देवास में 1747, सीहोर में 1732, इंदौर में 1364, राजगढ़ में 1210, भोपाल में 907, विदिशा में 822, रतलाम में 697, आगर-मालवा में 683, धार में 581, खंडवा में 522, मंदसौर में 498, नर्मदापुरम में 378, खरगोन में 359, नीमच में 281, हरदा में 180, झाबुआ में 91, बैतूल में 46, बड़वानी में 28 और रायसेन में 24 मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया गया है।

# व्यापमं के बर्खास्त छात्रों को 16-16 लाख में बनाया डॉक्टर!

## बिना परीक्षा एमबीबीएस की डिग्रियां देने का आरोप, सामने आया बाबू का ऑडियो

**ग्वालियर।** बिना परीक्षा दिए एमबीबीएस की डिग्री..! वो भी व्यापामं फर्जीवाड़े में बर्खास्त किए गए छात्रों को। ये आरोप लगे हैं ग्वालियर के जीवाजी विश्वविद्यालय से संबंधित गजराराजा मेडिकल कॉलेज में। मामले में शाखा प्रभारी प्रशांत चतुर्वेदी का एक ऑडियो भी सामने आया है। ऑडियो में वे जांच कमेटी द्वारा बर्खास्त एक छात्र को सफाई देते नजर आ रहे हैं। बातचीत में 16-16 लाख रुपए में डिग्री देने के आरोप भी लगाए गए हैं। छात्र शाखा (यूजी) प्रभारी प्रशांत चतुर्वेदी और उनके सहायक पंकज कुशवाह पर आरोप है कि व्यापमं कांड में बर्खास्त छात्रों को बिना बहाली, बिना अटेंडेंस और बिना परीक्षा दिए एमबीबीएस की डिग्री दे दी गई। पूर्व छात्र संदीप लहारिया ने इसकी लिखित शिकायत राज्यपाल और मेडिकल कॉलेज के डीन से की है। जीवाजी यूनिवर्सिटी के अधिकारियों और गोपनीय शाखा के कर्मचारियों पर मिलीभगत का भी आरोप लगाया है। लहारिया ने बताया कि व्यापमं मामले में करीब 150 छात्रों पर एफआईआर दर्ज की गई थी। इनमें से 30 से अधिक एमबीबीएस छात्रों को बर्खास्त किया गया था, जिनमें संदीप लहारिया खुद भी शामिल हैं। उनका दावा है कि बर्खास्त छात्रों में से किसी को भी अब तक बहाल नहीं किया गया है और न ही किसी नई कमेटी ने राहत दी है। इसके बावजूद कई छात्रों को एमबीबीएस की डिग्री जारी कर दी गई, जो धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है।

### यूजी शाखा प्रभारी पर डिग्री जारी कराने का आरोप

शिकायत में संदीप लहारिया ने आरोप लगाया है कि बर्खास्त छात्रों को गलत तरीके से एमबीबीएस डिग्री जारी की गईं। न तो उन्हें बहाल किया गया और न ही उन्होंने निर्धारित मानक पूरे किए। उनका कहना है कि इस पूरे मामले में छात्र शाखा (यूजी) प्रभारी प्रशांत चतुर्वेदी और उनके सहायक पंकज कुशवाह की भूमिका है। साथ ही मेडिकल कॉलेज प्रशासन और जीवाजी यूनिवर्सिटी के संबंधित अधिकारियों की मिलीभगत से फर्जी डिग्रियां जारी होने का आरोप लगाया गया है।

### ऑडियो में 16 लाख में डिग्री देने का आरोप

शिकायतकर्ता के अनुसार प्रशांत चतुर्वेदी का एक ऑडियो सामने आया है, जिसमें बर्खास्त छात्र के मामले में सफाई दी जा रही है। बातचीत में पूर्व छात्र द्वारा 16-16 लाख रुपए में डिग्री देने का आरोप लगाया गया है। शिकायतकर्ता का दावा है कि उसके पास कई ऑडियो और वीडियो हैं, जिनसे पूरे फर्जीवाड़े का खुलासा किया जा सकता है। पूर्व छात्र संदीप लहारिया ने बाबू प्रशांत चतुर्वेदी के अलावा मेडिकल कॉलेज के डीन समेत कई अधिकारियों व जीवाजी यूनिवर्सिटी के गोपनीय शाखा के अधिकारी व कर्मचारी शामिल हैं।

### जांच सौंप दी, लेकिन शिकायत का पता ही नहीं

इस मामले में ग्वालियर मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. आरकेएस धाकड़ से जब बात करना चाहा तो उन्होंने भी बाइट देने से मना कर दिया और इस शिकायत व गड़बड़झाला के बारे में पूछा तो उनका कहना था कि कई शिकायतें आती हैं। यह शिकायत आई होगी, लेकिन उनकी जानकारी में नहीं है। जबकि वह इस शिकायत की जांच डॉ. प्रमोद कुमार छाबनिया को सौंप चुके हैं।

# एमपी सरकार ने महिला उद्यमिता को दिया बड़ा बढ़ावा

## एमएसएमई विकास नीति–2025 ने महिलाओं को बनाया आत्मनिर्भर

### एमपी की स्टार्ट-अप नीति ने महिला उद्यमियों के सपनों को दी बड़ी उड़ान

**भोपाल।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के महिला सशक्तिकरण, उद्यमिता और 'वोकल फॉर लोकल' के संकल्प को मध्यप्रदेश सरकार ने साकार किया है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की अगुवाई में एमएसएमई विकास नीति : 2025 और स्टार्ट-अप नीति : 2025 ने महिलाओं को उद्यमी बनाने में अहम भूमिका निभाई है। मध्यप्रदेश की नीतियों में महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व और योजनाओं के कारण ही 24 लाख 34 हजार सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम में से 4.11 लाख यानि 17 फीसदी इकाइयाँ महिलाओं द्वारा संचालित हैं। गत वर्ष ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा लोकार्पित स्टार्ट-अप नीति में 7264 में से 3476 यानि 48 स्टार्ट-अप महिलाओं के हैं। मध्यप्रदेश की यह तस्वीर राज्य सरकार की देश में सशक्त उपस्थिति दर्ज कराता है। इससे स्पष्ट है कि महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर भारत का सपना मध्यप्रदेश में साकार हो रहा है।

**मध्यप्रदेश की एमएसएमई विकास नीति में बड़े प्रावधान-** महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। अब उन महिला उद्यमियों को जो संयंत्र रू. 10 करोड़ तक के निवेश पर अधिकतम 48 प्रतिशत तक की पूंजी अनुदान दिए जाने का प्रावधान किया गया है। अनुसूचित जाति और जनजाति की महिलाओं के लिए यह दर अधिकतम 50 प्रतिशत निर्धारित की गई है, जबकि सामान्य वर्ग के लिए 40 प्रतिशत है। इस नीति से मार्च 2026 तक 24.34 लाख से अधिक एमएसएमई इकाइयों में से करीब 4.11 लाख महिलाओं द्वारा स्थापित की गई हैं। 2025 में महिलाओं द्वारा स्थापित स्टार्ट-अप को 18त्न वित्तीय सहायता का प्रावधान किया गया है। प्रति ट्रॉंच 18 लाख रुपये तक की मदद मिल सकती है और कुल सहायता 72 लाख रुपये तक हो सकती है। अन्य स्टार्ट-अप के लिए यह सीमा 15 प्रतिशत या 15 लाख रुपये है। अब तक 7264 मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप में से 3476 मतलब 48 फीसदी महिला उद्यमियों द्वारा चलाए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश शासन के इन कदमों से महिला सशक्तिकरण में नई ऊंचाइयां हासिल हो रही हैं।